# भाव विज्ञान

## BHAV VIGYAN

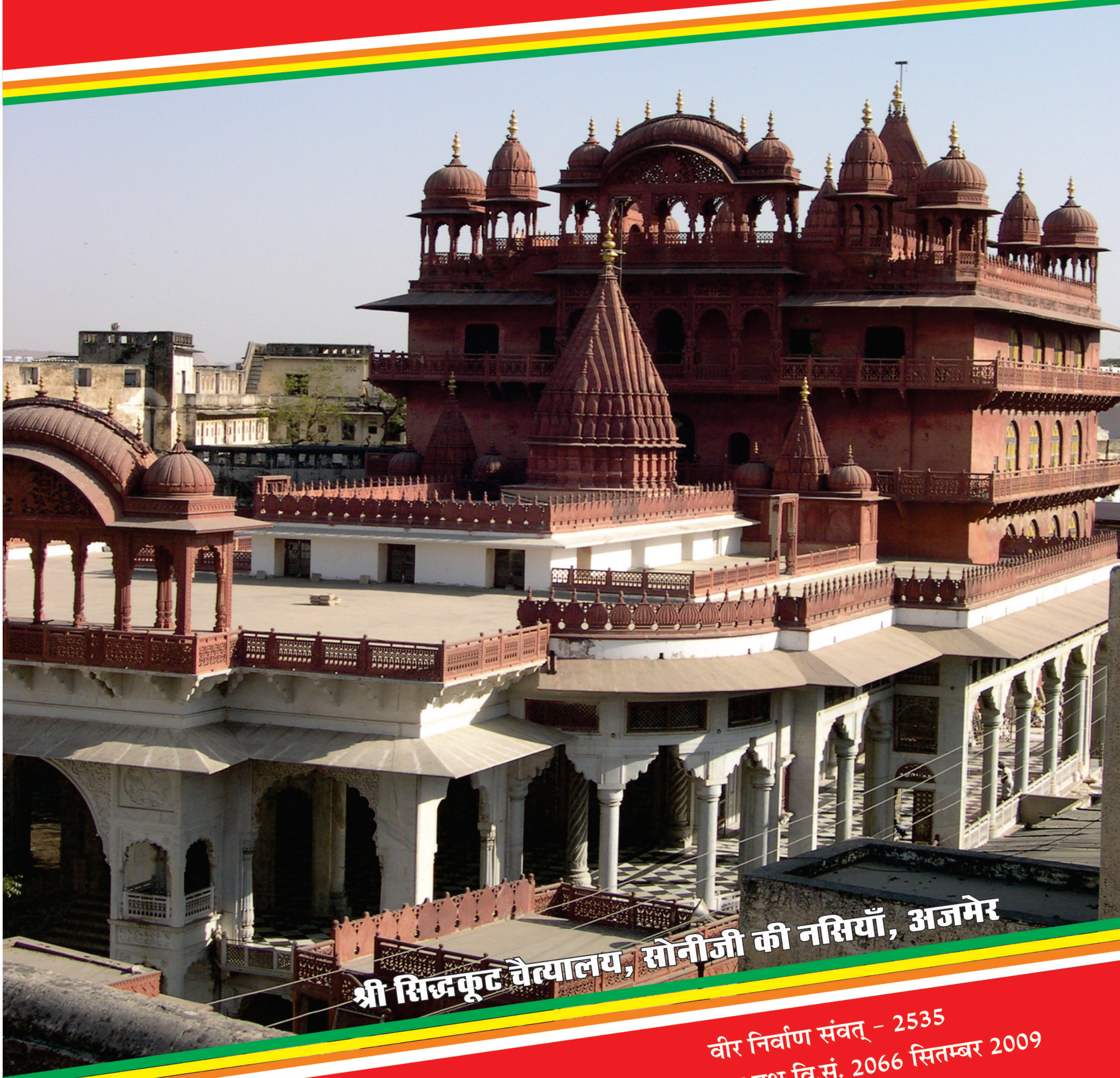


वीर निर्वाण संवत् - 2535
अश्विन कृष्ण पक्ष वि.सं. 2066 सितम्बर 2009
मूल्य : 10/-
वर्ष : तृतीय अंक : नवम्

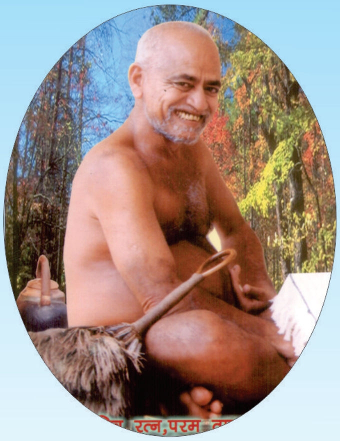

## गुरु महिमा

- गुरु वचन आपत्तियों में पथ प्रदर्शित करते हैं।
- गुरु के द्वारा दिये गये निर्देश दीपक की तरह हमारे पंथ को आलोकित करते हैं।
- जिसे गुरुओं द्वारा राह मिल जाती है फिर उसके लिये किसी तरह की परवाह नहीं होती।
- यह बात ठीक है कि आँखें हमारी है दृष्टि हमारी है लेकिन उसका उपयोग कैसे करना है? यह हमें गुरु ही सिखाते हैं।

**संत शिरोमणि 108 आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज का पावन वर्षायोग ( चातुर्मास-2009 )** श्री दिगम्बर जैन सर्वोदयी तीर्थ क्षेत्र, अमरकंटक जिला-अनूपपुर (म.प्र.) में हो रहा है।

- आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के द्वारा दीक्षित प्रायः सभी साधुगण बाल ब्रह्मचारी हैं। जैन श्रमण परंपरा के ज्ञात इतिहास-जानकारी में यह प्रथम संघ हो सकता है जिसमें वर्तमान दीक्षित 253 साधु एवं आर्यिकाएँ भी प्रायः बाल ब्रह्मचारिणी हैं।
- आचार्यश्री की आज्ञानुसार देश के विभिन्न नगरों में लगभग 100 बाल ब्रह्मचारी भाई एवं 300 बाल ब्रह्मचारिणी बहनें भी चातुर्मास कर रही हैं।
- आचार्यश्रीजी के द्वारा प्रतिदिन प्रातःकाल प्रमेय रत्नमाला (परीक्षामुख) संघस्थ साधुओं के लिए एवं अपराह्न सभी के लिए आलाप पद्धति का स्वाध्याय होता हैं।

मुनिश्री को शास्त्र भेट करते हुए
श्री अशोक पाटनी, आर.के. मार्बल्स, किशनगढ़

मंगलाचरण करते हुए श्रीमती सुशीला पाटनी

प्रवचन से पूर्व विचार व्यक्त करते हुए
पं. मूलचंद जी लुहाड़िया

प्रवचन में उपस्थित जनसमूह

## शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी
के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य
**मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज।**

● *परामर्शदाता* ●
**डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन**
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
**पंडित मूलचंद लुहाड़िया**
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●
**श्रीपाल जैन 'दिवा'**, भोपाल
फोन : 4221458, 9893930333, 9977557313

● *प्रबंधक सम्पादक* ●
**डॉ. सुधीर जैन**
प्राध्यापक, भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●
**डॉ. सी. देवकुमार,** प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
**पं. जय कुमार 'निशांत',** टीकमगढ़ (म.प्र.)
**डॉ. अजित कुमार जैन,** भोपाल (म.प्र.)
**डॉ. संजय जैन, पथरिया,** दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●
**पं. लालचंद जैन 'राकेश'**
नेहरू चौक, गली नं. 4, गंजबासौदा (विदिशा) म.प्र.

● *प्रकाशक* ●
**श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन**
एमआईजी 8/4, गीतांजलि काम्पलेक्स
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2673820, 94256 01161

**शिरोमणी संरक्षक**
**दानवीर, किशनगढ़**

● *सदस्यता शुल्क* ●

| | | |
|---|---|---|
| शिरोमणी संरक्षक | : | 51,000 |
| परम संरक्षक | : | 21,000 |
| सम्मानीय संरक्षक | : | 11,000 |
| संरक्षक | : | 5,100 |
| विशेष सदस्य | : | 3100 |
| आजीवन सदस्य | : | 1100 |

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं
रचनाएँ सम्पादक के पते पर भेजें।



रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक **भाव विज्ञान**
**(BHAV VIGYAN)**

तृतीय वर्ष
अंक नवम्


## पल्लव दर्शिका

**विषय वस्तु एवं लेखक** — **पृष्ठ**


1. **सम्पादकीय** — श्रीपाल जैन 'दिवा' — 2
2. **जैन धर्म में कर्म व्यवस्था** — मुनि आर्जवसागर — 6
3. **सोलहकारण पर्व** — श्रीमती सुशीला पाटनी — 12
4. **मंगल आराधना प्रसून** — प्रो. सुशील पाटनी — 14
5. **सम्यक ध्यान शतक** — मुनि आर्जवसागर — 16
6. **ग्रंथ समीक्षा सम्यक ध्यान शतक** — श्रीपाल जैन 'दिवा' — 17
7. **आचार्य ज्ञानसागर ध्यान केन्द्र-दीक्षायतन** — श्रीमती साधना जैन — 18
8. **अजमेर का गौरवमय स्वर्णिम इतिहास** — नवरतनमल पाटनी — 27
9. **पर में सूख ढूढ़ा** — मुनि आर्जवसागर — 29
10. **आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव** — डॉ. अजित कुमार जैन — 30
11. **रत्नत्रय उपहार** — डॉ. रमेश कुमार जैन — 32
12. **अजमेर नगर वर्षायोग की अपूर्व ऐतिहासिक धर्म प्रभावना** — 34
13. **भावविज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता** — 37



**लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।**
**भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।**

सम्पादकीय

# चर्या के पर्व

*श्रीपाल जैन 'दिवा'*

जो संसार में रहते हुए संसार में नही रहते ! जो चलते हुए भी ठहरे रहते हैं वे साधक होते हैं सच्चे साधु होते हैं। वे सूक्ष्म अहिंसा के पालक और आत्मा के आराधक होते हैं। सूक्ष्म जीवों के विराधन से भी बचने का विवेक रखते हैं। वर्षाऋतु में सूक्ष्म जीवोत्पत्ति का आधिक्य रहता है। उनकी रक्षा का भाव, साधु को चार माह तक एक स्थान पर ठहरने का मंगल अवसर देता है। इसी चार माह की अवधि को चातुर्मास कहा जाता है। साधु/श्रमण के लिए चातुर्मास साधना का महा महोत्सव होता है। श्रमण ठहर कर भी ठहरते नहीं है। उनकी साधना सतत और तीव्रगति से चलती है। इसका लाभ श्रावकों को भी मिलता है। साधु के सत्संग से श्रावक भी अपनी शक्ति अनुसार धर्म साधना की ओर उन्मुख होता है। अपने अन्दर उतरने का श्रावक को भी मार्गदर्शन मिलता है।

अतः चातुर्मास में आचार में अहिंसा की साधना होती है, विचार में अनेकान्त का विवेक जागृत होता है, वाणी में स्याद्वाद का सद्भाव होता है और समाज में अपरिग्रह का उदय होने लगता है। जो भी श्रावक-श्रोता साधु की मंगल उपस्थित एवं सान्निध्य-सत्संग का लाभ उठाता है उसके जीवन में चातुर्मास आध्यात्म के आनन्द की वर्षा वाले मेघ साबित होते हैं। श्रमण का उपयोग भी घोर साधना एवं तप में निर्बाध लगता है और 'परस्परोग्रहोजीवानाम' चरितार्थ होने लगता है। प्रतिवर्ष चातुर्मास में सोलहकारण पर्व का भी सद्भाव होता है। रक्षाबंधन से उत्तम क्षमावाणी पर्व तक एक माह तक सोलहकारण व्रत महोत्सव मनाया जाता है जिसमें सोला की विधि से आहार चर्या एवं उपवास प्रौषधोपवास की साधना की जाती है। तप के ताप से विषय कषायों को कृश किया जाता है। और मुनियों की चर्या को स्पर्श करने का सद्प्रयास/अभ्यास किया जाता है। धर्म-दर्शन को अपने अंदर उतारने का मंगल अवसर मिलता है। दर्शन में विचार-चर्चा है तो धर्म में चर्या का सद्भाव है। चातुर्मास में यह चर्चा और चर्या की गंगा-यमुना खूब बहती है जिसमें भक्ति की सरस्वती अन्दर ही अंदर बहकर त्रिवेणी का रूप लेकर प्रयाग हो जाती है। और यह त्रिवेणी पर्यूषण पर्व के रूप में हम सबको प्रतिवर्ष उपलब्ध होती है। पर्यूषण पर्व अपने पास/अपनी आत्मा के पास बैठने का/निकट आने का पर्व है। आत्म शुद्धि का पर्व है जिसमें अशुद्धि की गाँठें/मिथ्यात्व एवं कषायों की गाँठे खोलने का पुरुषार्थ किया जाता है। मिथ्यात्व राग-द्वेषादि कषायों के दस तालों की दस कुंजियाँ हैं जिनसे हम उन तालों को खोलकर उन काल कोठरियों से अपनी आत्मा को मुक्त करने का सद्पुरुषार्थ करते हैं/कर सकते हैं। वे दस ताले हैं १. क्रोध २. मान ३. माया ४. लोभ ५. असत्य ६. असंयम ७. अनन्त इच्छाएँ ८. बाह्य और अभ्यंतर परिग्रह ९. पर में एकत्व बुद्धि और लीनता १०.

पंचेन्द्रिय विषय प्रवृत्ति। इन दस तालों की दस कुंजियाँ हमारी आत्मा के पास हैं। हम उन कुंजियों का सदुपयोग कर उन तालों को खोल सकते हैं। वे दस कुजियाँ ये हैं - १. क्षमा/उत्तम क्षमा २. मार्दव / उत्तम मार्दव ३. आर्जव / उत्तम आर्जव ४. शौच / उत्तम शौच ५. सत्य / उत्तम सत्य ६. संयम / उत्तम संयम ७. तप / उत्तम तप ८. त्याग / उत्तम त्याग ९. आकिंचन्य १०. ब्रह्मचर्य / उत्तम ब्रह्मचर्य

काल कोठरी / कर्म कोठरी का पहला ताला क्रोध का मजबूत ताला है। क्रोध के ताले की कुंजी क्षमा है श्रावक के लिए, उत्तम क्षमा है श्रमणों के लिए। उसका अपने पदानुसार क्षमा कुंजी का उपयोग करिये और क्रोध के ताले से अस्थायी / स्थायी मुक्ति प्राप्त करिये। क्षमा भाव हृदय के औदार्य एवं सहनशीलता का सुफल है। पर की भूलों को भूलो। छिद्रान्वेषण की प्रवृत्ति को छोड़ो-परनिन्दा से मुख मोड़ो-विवाद से बचो और शुभ संवाद का सद्‌भाव करो। ऐसी क्षमा की कुंजी से ही क्रोध का ताला खुल पायेगा। मायाचारी क्षमा की जंग लगी टेढ़ी कुंजी से क्रोध का ताला खुलेगा नहीं। उत्तम क्षमा दस धर्म का शिरोमणि धर्म है। यही मोक्ष का द्वार है। क्रोध का बार-बार सद्‌भाव होने पर बैर का जन्म होने लगता है। बैर विभाव घोर अहितकारी होता है। नरक के दुख भुगाने का प्रबन्ध करने में 6 माह तक रहने वाला बैर सक्षम होता है। क्रोध और बैर को बिदा करने का मंगल पुरुषार्थ करने का महापर्व पर्युषण पर्व है।

दूसरा ताला है मान का। वह भी मजबूत ताला है। पर मृदुता की / विनम्रता की कोमल कुंजी से वह तुरंत खुल जाता है। 'उत्तम मार्दव' असली कुंजी है कहा भी है 'मृदोर्भावः मार्दवम्' मृदुता या कोमलता का भाव ही मार्दव है। संसार में हर मनुष्य मान का वज़नदार मोटा ताला लगाये घूम रहा है। किसी को ज्ञान का मान है तो किसी को धन-ऐश्वर्य का घमंड है। किसी को रूप का गुमान है तो किसी को उच्च कुल के उच्चता बोध का अहं है।

रत्नकरण्डक श्रावकाचार में बताया गया है कि मान के आठ आश्रय हैं -

ज्ञानं पूजां कुलं जातिं बलमृद्धिं तपो वपुः । अष्टावाश्रित्यं मानित्यं स्मयमाहुर्गतस्मयाः ।।

'ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल, ऋद्धि, तप और शरीर ये आठ आश्रय हैं मान के।' इन्हें मान रहित भगवान मान कहते हैं। मान रहित होने में मृदुता/कोमलता के साथ सरलता का सद्‌भाव भी होना आवश्यक है। सरलता का सद्‌भाव यानी माया कषाय का अभाव। माया कषाय को और मोटा-मजबूत ताला होता है। इस ताले के सद्‌भाव में व्यक्ति सरल न होकर कुटिल हो जाता है। उसका स्वभाव सरल-सहज नहीं होता। उसके मन-वचन-काय में एक रुपता नहीं होती। मायाचारी छल कपट की प्रवृत्ति से व्यवहार करता है। माया कषाय के अभाव से आर्जवधर्म का सद्‌भाव होता है। कहा है - 'ऋजोर्भावः आर्जवम्' ऋजुता/सरलता को ही आर्जव कहते हैं। यह आर्जव ही मायाकषाय के ताले की

कुंजी है। कुटिलता/मायाचारी की क्रूरता को सरलता ही सरलता से सफाई करती है। इस हेतु भावों में शुद्धि का सद्‌भाव भी आवश्यक है। भावों की शुद्धि/शुचिता/पवित्रता का नाम शौच है। कहा भी है - 'शुचेर्भावः शौचम्' शुचिता का भाव ही शौच है। यह शौच धर्म की पवित्र कुंजी ही लोभ कषाय के महान-मजबूत ताले को खोलने में सक्षम होती है। इस हेतु अनेक प्रकार के लोभ भावों का त्याग आवश्यक है। जिससे आत्मा शुद्ध भावों से भरी रहे। खोटे भावों का सद्‌भाव ही न हो। निर्लोभी स्वभाव आत्मा का ही होता है वह उसे प्राप्त हो जावे तभी लोभ कषाय का अभाव होगा। लोभ केवल धन का ही नहीं होता। रूप का लोभ, नाम का लोभ, यश का लोभ अनेक लोभ ही लोभ हैं। लोभ पर लगाम लगाये बिना शौचधर्म प्रकट नहीं होगा। लोभ महान कषाय है इसका विनाश शौच धर्म से होता है अतः शौचधर्म भी क्षमा-मार्दव-आर्जवधर्म से महान धर्म है। कहा भी है - 'शौच सदा निरदोष, धर्म बड़ो संसार में।' वस्तुतः लोभ कषाय का अभाव अर्थात सभी कषायों के अभाव से युक्त आत्मा सभी कषायों के अभाव में ही आत्मा पवित्र हो पाती है। निष्कषाय आत्मा की यही पवित्रता उत्तम शौचधर्म है।

मनुष्य जीवन में असत्य का ताला सत्य की कुँजी से ही खोला जाना है। असत्य वचन के अभाव का आरम्भ ही सत्यवचन / सत्य धर्म का शुभारम्भ समझना चाहिए। सत्य वचन को चाहे व्यवहार से सत्य धर्म कहा जाये पर व्यवहार से ही सत्यधर्म का सद्‌भाव तो होने लगे जैसे शुभ कर्म के सद्‌भाव से अशुभ छूटता है। यदि अशुभ छूटे ही नहीं तो अशुभ ही अशुभ होता रहेगा। शुभ का सद्‌भाव ही नहीं होने पायेगा। तो जीवन में पापों की भरमार हो जावेगी। अतः असत् के अभाव हेतु सत् का सद्‌भाव हो तो व्यवहार से ही सही। तभी धर्मी निश्चय वाले सत्यधर्म की ओर बढ़ेगा। तभी उसे सत्य धर्म उपलब्ध होगा जो आत्म धर्म है। व्यवहार के पड़ाव को पार तो करना पड़ेगा तभी वह निश्चय साध्य को प्राप्त करेगा। यहीं से संयम रत्न की प्राप्ति की ओर बढ़ेगा। यही संयम रत्न की कुंजी असंयम के ताले को खोलती है। धवला में कहा भी है - 'संयमनं संयमः'। संयमन ही संयम है। जब अपने उपयोग को अशुभ से हटाकर व्यक्ति शुभ में लगाता है तब व्यवहार संयम के पड़ाव पर होता है और शुभ से भी उपयोग हटाकर वीतरागतामय हो जाता है निश्चय संयम की शुद्धि प्राप्त कर उत्तम संयम धर्ममय हो जाता है। वस्तुतः उत्तम संयम धर्म निर्ग्रंथ मुनियों को ही होता है। असंयम के ताले को खोलकर उत्तम तप धर्म की कुंजी से अनन्त इच्छाओं के ताले को खोला जाता है। अनन्त इच्छाओं की पूर्ति के लिये विभिन्न कर्म मनुष्य करता है। इन पूर्व / वर्तमान के कर्मों के क्षय के लिए जो तपा जाता है वह तप है। तप के ताप से इच्छाओं का दहन करना विषय कषायों का निग्रह कर ध्यान करना एवं अपनी आत्मा को जो भाते हैं उन्हें तप धर्म की प्राप्ति होती है। वास्तव में उत्तम तप धर्म निर्ग्रंथ मुनियों के ही होता है। फिर भी गृहस्थ श्रावक अपनी शक्ति अनुसार उपवास ध्यान-स्वाध्याय कर तप धर्म का पालन कर सकता है। महान बाधक परिग्रह का कठोर मजबूत ताला तो उत्तम त्याग धर्म की कुंजी से

ही खोला जा सकता है। मनुष्य जन्म जन्मान्तर से परिग्रह प्रेमी है। परिग्रह से साहचर्य जन्य प्रगाढ़ प्रेम है। संसार के सम्पूर्ण पर द्रव्यों से यह मोह उत्तम त्याग धर्म प्राप्ति में बाधक है। इस मोह का त्याग करके मन वचन काय से निर्वेद भाव को धारण करना उत्तम त्याग धर्म है। व्यवहार में दान देना, लोभ लाभ का अभाव का सद्भाव करना चार प्रकार का दान औषध शास्त्र अभय और आहार दान देना त्याग धर्म है। लोभी परिग्रही लोग दान नहीं कर पाते, त्याग भावना उनके पास नहीं फटकने पाती परन्तु फिर भी दान परम्परा की अविरल धारा बह रही है। दानवीर आधुनिक भामाशाह अभी धरती पर विद्यमान हैं उनमें से एक 'किशनगढ़ के स्व. सेठ श्री रतनलालजी पाटनी रहे हैं।' शून्य से शून्य तक पहुँचने वाले इस दानवीर को 'जैन गौरव' की पदवी से भी विभूषित किया गया। आपने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। आचार्य विद्यासागर जी के परम भक्त रहे। १०६ वर्ष की आयु में शांत परिणामों के साथ ध्यान सहित स्वर्गारोहण किया। बिना नाम पट्ट लिखवाये दान देने की शुभ परम्परा के समर्थन के साथ दान देना उनका स्वभाव था। इस दान परम्परा के निर्वाह के लिए वर्तमान में उनके तीन पौत्र (बड़े भाई भँवरलाल के पुत्र कँवरलाल जी के बेटे) अशोक जी, सुरेश जी तथा विमल जी पाटनी हैं। तीनों ने विश्व में सर्वाधिक मार्बल उत्पादक का खिताब प्राप्त किया 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में नाम दर्ज हुआ। आर.के. मार्बल ग्रुप विश्व में प्रसिद्ध है। 'दोनों हाथ उलीचिये घर में बाढ़ें दाम' वाली कहावत को चरितार्थ होते इस परिवार में देखा जा सकता है जो अनुकरणीय है।

पर में एकत्व बुद्धि और लीनता के ताले की कुंजी आकिंचन्य धर्म है। ममत्व भाव का अभाव होना, पर द्रव्यों के ममत्व का त्याग करना, परिग्रह मोह से मुक्त होकर सुख दुःख दाता निज भावों का निग्रह करके निर्द्वन्द्व भावों को धारण करने वाले को ही आकिंचन्य धर्म की प्राप्ति होती है। यह अनगारों को ही उपलब्धि होती है। पर पदार्थों से भिन्न रहते हुए निज स्वभाव में रहना उत्तम आकिंचन्य धर्म है।

अंतिम ताला पंचेन्द्रिय विषय प्रवृत्ति का है। इसकी कुंजी उत्तम ब्रह्मचर्य है पर में लीनता का अभाव या निजात्मा में लीनता ही ब्रह्मचर्य है। ब्रह्म यानी निर्मल ज्ञान स्वरूप आत्मा है। इस निर्मल ज्ञान स्वरूप आत्मा में लीन होना ही तो ब्रह्मचर्य है। पंचेन्द्रिय के विषय सुखों के त्याग से ही आत्मा निर्मल होती है। निर्मल आत्मा में ही ब्रह्मचर्य धर्म प्रकट होता है। ब्रह्मचर्य धर्म ही मोक्ष का द्वार है।

मोक्ष साधना के महान पर्व पर्युषण पर्व का समापन भी क्षमावाणी पर्व मनाने से होता है। क्षमा से प्रारम्भ होकर क्षमा से ही इति होती है। क्षमा वाणी दिवस का मैत्री-दिवस भी कहा जा रहा है। इस मैत्री दिवस को विश्व स्तर पर मनाये जाने की पहल हम लोगों को करना चाहिए। क्षमा भाव में ही विश्व शांति का सद्भाव करने की महान शक्ति विद्यमान है। इसी मंगल भावना से भाव-विज्ञान परिवार आप सबके साथ सम्पूर्ण विश्व के जीवों से हृदय से क्षमा याचना करते हुए स्वयं भी सब जीवों को क्षमा करने का मंगल भाव रखता है।

# जैन धर्म में कर्म व्यवस्था

*मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के प्रवचन पर आधारित*

अनादि कालीन पंच परावर्तन रूप लोक में अनन्तानन्त जीव द्रव्य की ओर दृष्टिपात करते हैं तो ज्ञात होता है कि जीव की विविध अवस्थाएँ नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, देव, एकेन्द्रिय, द्विन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय होती हैं। जीव राशि कर्मों के आश्रित चतुर्गति एवं चौरासी लाख योनियों में जन्म-मरण कर अनादिकाल से संसार परिभ्रमण कर रही है। संसरतीति संसारः संसरतीति अर्थात् चतुर्गति भ्रमण, जिसका अर्थ संसार होता है। अनादिकाल से यह आत्मा संसार में है, कर्मों से सहित है। कभी मुक्त थी, बाद में संसारी बनी, ऐसा नहीं है, क्योंकि अनादिकाल से कर्मों का संयोग लगा हुआ है।

कोई सुखी, कोई दुःखी, कोई धनवान, कोई गरीब, कोई दीर्घायु, कोई अल्पायु, कोई रोगी, कोई निरोगी, कोई साधन सम्पन्न, कोई असम्पन्न, कोई अपंग, कोई कुरूप, कोई सर्वांग सुन्दर, कोई विद्वान, कोई मूर्ख आदि अनेक विध जीव की अवस्थायें दृष्टिगत होती हैं। ज्ञानी जनों के हृदय में सहज ही इनका कारण जानने की जिज्ञासा होती है। जैसे एक परिवार में एक ही माता-पिता के दो बच्चे उत्पन्न होते हैं, उनमें एक तो सुन्दर गोरा सबको भाने वाला प्रीतिकर है, वहीं दूसरा असुन्दर कुरूप, किसी को भी न सुहाने वाला। यह देखने पर विचार उठता है कि यह अन्तर क्यों है? माता-पिता एक, सभी स्थितियाँ समान हैं, फिर इसका क्या कारण है? तब प्रतीत होता है कि कोई विचित्र शक्ति काम कर रही है, क्योंकि सभी बातें समान होने पर भी ऐसा क्यों, वह शक्ति क्या है? वह है 'कर्म'। कर्म दिखता नहीं है, अदृश्य होता है। कर्म को किसी यन्त्र से नहीं देख सकते, जान नहीं सकते। जैसे शब्द को हम देख नहीं सकते, ऐसी ही वस्तु है कर्म। अपनी आत्मा में कर्म को कैच कर सकते हैं। हमारी आत्मा में जैसा शुभ और अशुभ भाव उत्पन्न होता है, वैसा ही कर्म भी शुभ-अशुभ, पुण्य-पाप रूप में बंध जाता है। आत्मा में कुछ काल तक वह रहता है, अपने को सुख-दुःख पहुँचाता है। जब तक कर्म रहेगा, तब तक हमें पूर्ण रूपेण शांति नहीं मिलेगी। मोक्ष भी नहीं मिलेगा। पुण्य से जीव को सुख मिलता है और सुख के साधन भी मिलते हैं, जीवन सुखमय प्रतीत होता है। जब अशुभ भाव करते हैं तब उस समय पाप रूप बंध होता है। इससे जीव को दुःख मिलता है।

अज्ञानी, लोक में परिग्रह, इन्द्रियों के विषयों में लीन होकर तरह-तरह के हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, और परिग्रह आदि पाप करके आत्मा में पाप का बंध करते रहते हैं। पाप कर्म के कारण जीव अपंग, असुन्दर, कुरूप, अप्रीतिकर, आदि होता है। जो पापों से दूर होकर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि व्रतों का पालन करते हैं, पुण्य कर्म के कारण जीव को सुन्दरता, प्रीतिकरता, शक्तिवर्धकता, सम्पन्नता आदि प्राप्त होते हैं। उसको सदाचरण ही सच्चे

सुख को प्राप्त कराता है ऐसा तीर्थंकरों की दिव्य ध्वनि में निर्झरित हुआ और गुरुओं ने उपदेश दिया है। कर्म के साक्षात् फल को हम लोक में देखते हैं। यह सब अपने-अपने पूर्वकृत पुण्य-पाप कर्मों का फल होता है। इसी कारण लोक के हर एक व्यक्ति में बहुत अंतर दिखता है।

कर्म क्या है, कहाँ रहते हैं कर्म ? तो समस्त लोकाकाश में २३ प्रकार की पुद्गल वर्गणायें व्याप्त हैं, उन वर्गणाओं में से एक तरह की ऐसी वर्गणायें विद्यमान हैं जिनमें कर्म बनने की शक्ति होती है। अर्थात् जो पुद्गल वर्गणायें कर्म रूप में परिणत होने की योग्यता रखती हैं उन्हें कार्मण वर्गणा कहते हैं और जो शरीर रूप में परिणत होती हैं उन्हें नोकर्म वर्गणा कहते हैं। जैसे - हम शब्दों को देख नहीं सकते, लेकिन सुन सकते हैं, अनुभव से जान सकते हैं, शब्द सब जगह भरे हुए हैं। इनमें कुछ शब्द तो आप सुनते हैं और कुछ तो आपको सुनने में नहीं आते हैं। जैसे कि दृष्टांत स्वरूप टी. वी. या रेडियो को लेते हैं, आप जो चैनल या रेडियो का स्टेशन लगाते हैं उसी से सम्बन्धित भाषा वर्गणाओं के शब्द आपको सुनाई देते हैं, अन्य नहीं जबकि अन्य चैनल या स्टेशन रेडियो पर भाषा वर्गणा के शब्द रहते हैं लेकिन आप उन्हें सुन नहीं सकते। जैसे ही आप चैनल या रेडियो का बैण्ड बदलते हैं तो आप उनको सुन सकते हैं। आस्था या संस्कार वाला चैनल तथा विविध भारती या सीलोन, लन्दन आदि स्टेशन हैं पर जब आस्था चैनल लगायेंगे तब संस्कार वाला चैनल नहीं आयेगा, रेडियो में विविध भारती लगाओगे तो सीलोन, लन्दन स्टेशन नहीं आयेगा, जब संस्कार वाला आयेगा, तब आस्था नहीं आयेगा, सीलोन, लन्दन आयेगा तो विविध भारती नहीं सुन पाओगे। आप इन्हें अलग-अलग ही सुन सकते हैं लेकिन शब्द रहते हुए हमारे कानों में नहीं आते, हम सुन नहीं पाते हैं, वैसे ही कार्मण वर्गणायें सब जगह फैली हैं, वे हमें दिखायी नहीं देती हैं। वे एक पुद्गल रूप ही हैं। जो तेईस प्रकार की वर्गणाओं में से कार्मण वर्गणायें विस्रसोपचय के रूप में अपने आत्मप्रदेशों के चारों ओर विद्यमान रहती हैं। जैसे चुम्बक में लोहे को आकर्षित कर खींचने की शक्ति होती है उसी प्रकार संसारी आत्मा में कार्मण वर्गणाओं को सब ओर से खेंचकर कर्म योग्य बनाने की शक्ति होती है। अतः संसारी जीव, पुद्गलों को प्रतिसमय आकृष्ट कर ग्रहण करते हैं। ये अष्टकर्म हमेशा परमात्मा बनने के पहले आत्मा से बंधकर अपना फल चखाते रहते हैं।

राग-द्वेष आदि से युक्त संसारी जीव में प्रति समय मन, वचन, काय से मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग इन पांच निमित्तों से तथा प्रत्येक कर्म के विशिष्ट कारणों से होने वाली परिस्पन्दन रूप क्रिया से आत्मा के प्रति आकृष्ट होकर कार्मण वर्गणा के पुद्गल आते हैं। राग-द्वेष रूपी भावों का निमित्त पाकर ये पुद्गल आत्मप्रदेशों से बद्ध हो चिपक जाते हैं और कर्म के लक्षण को प्राप्त होते हैं। मन, वचन, काय की प्रवृत्ति भी तभी होती है जब पूर्व से जीव के साथ कर्म

का सम्बन्ध हो। जीव के साथ कर्म का तभी सम्बन्ध होता है, जब मन, वचन, काय की प्रवृत्ति हो। अतएव प्रवृत्ति से कर्म और कर्म से प्रवृत्ति की परम्परा अनादिकाल से चली आ रही है।

कर्मों के बन्ध से आत्मा अनादिकाल से इस संसार में भ्रमण कर रही है। राग-द्वेष रूप परिणामों से कर्मों का बन्ध होता है, बन्ध से गति होती है, गति से शरीर मिलता है, शरीर में इन्द्रियाँ मिलती हैं, इन्द्रियों को विषय भोग मिलते हैं, विषय भोग में राग-द्वेष होता है, राग-द्वेष से कर्म बन्ध होता है और कर्मों से पुन: गति ऐसा यह चक्र अनादिकाल से चल रहा है। संसार में कर्म और कर्म से संसार भ्रमण चलता रहता है। महामनीषी आचार्य कुन्द-कुन्द स्वामी पंचास्तिकाय ग्रन्थ में लिखते हैं -

जो खलु संसारत्थो जीवो तत्तो दु होदि परिणामो।
परिणामादो कम्मा कम्मादो होदि गदि सुगदी ।।१२८।।
गदि मधिगदस्स देहो देहादो इंदियाणि जायंते।
तेहिं दु विसयग्गहणं तत्तो रागो व दोसो वा ।।१२९।।
जायदि जीवस्सेवं भावो संसार चक्क वालम्मि।
इति जिणवरेंहि भणिदो अणादिणिधणो सणिधणो वा ।।१३०।।

अर्थात् - जो संसारी जीव है वह राग-द्वेष आदि भावों को उत्पन्न करता है, जिनसे कर्म आते हैं, और कर्मों से मनुष्य, पशु आदि गतियों में उत्पत्ति होती है। गतियों में जाने पर शरीर की प्राप्ती होती है, शरीर से इन्द्रियाँ उत्पन्न होती हैं, इन्द्रियों द्वारा विषयों का ग्रहण होता है, जिससे राग और द्वेष होते हैं। इस प्रकार के भाव, संसार चक्र में भ्रमण करते हुए जीव के संतति की अपेक्षा अनादि अनन्त और पर्याय की दृष्टि से सान्त भी होते रहते हैं।

जैसे कोई प्रश्न करे कि बीज पहले था या वृक्ष? कभी कोई ऐसा समय नहीं था, जब पहले वृक्ष या बीज उत्पन्न हुआ और उससे वृक्ष तथा बीज की परम्परा चल पड़ी। यह परम्परा अनादि है। अभव्य की अपेक्षा अनादि अनन्त तथा भव्य की अपेक्षा अनादि सान्त है। अनादि कालीन परम्परा को तोड़ा भी जा सकता है। बीज वृक्ष की परम्परा तभी तक चल सकती है जब तक बीज को जलाकर नष्ट न कर दिया जाये। वैसे ही जीव का संसार भ्रमण तभी तक चलता है जब तक कि समस्त कर्म रूपी बीज को या कार्मण शरीर को शुक्ल ध्यान रूपी अग्नि से नष्ट न कर दिया जाये। जैसा कि तत्त्वार्थसार में आचार्य अमृतचन्द्र जी कहते हैं कि -

दग्धे बीजे यथात्यन्तं प्रादुर्भवति नांकुर: ।
कर्म बीजे तथा दग्धे न रोहति भवांकुर: ।। ७।।

अर्थात् - जैसे बीज के जल जाने पर पुन: नवीन वृक्ष के निमित्त बनने वाला अंकुर उत्पन्न नहीं होता, उसी प्रकार कर्म बीज के भस्म होने पर भवांकुर उत्पन्न नहीं होता। कर्म प्रवाह भी व्यक्ति

विशेष की दृष्टि से अनादि तो है परन्तु अनन्त नहीं है क्योंकि व्यक्ति नवीन कर्मों का बन्ध रोक सकता है। जब व्यक्ति में राग-द्वेष रूपी कषाय का अभाव हो जाता है तो नये कर्मों का बन्ध नहीं होता और कर्म प्रवाह की परम्परा समाप्त हो जाती है। साधना के द्वारा संचित कर्मों का क्षय करने पर आत्मा कर्म मुक्त हो जाती है।

इस जगत में प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है, वह परमात्मा बन सकती है लेकिन उसे भव्य होना चाहिए। जैसे कि स्वर्ण पाषाण जमीन से निकलता है और उससे स्वर्ण निकलता है। एक ऐसा भी पाषाण होता है जिसको अन्ध पाषाण कहते हैं, उससे स्वर्ण कदापि नहीं निकलता है। उसके अन्दर उपादान इतना सशक्त नहीं होता कि वह अपने अन्दर की शक्ति को व्यक्त कर सके। लोग कहते हैं कि मयूर के पंख में स्वर्ण होता है, लेकिन उसको कोई बाहर नहीं निकाल सकता और किसी भी प्रकिया से वह बाहर नहीं निकाला जा सकता। उसी प्रकार कुछ ऐसे दूरानुदूर भव्य जीव इस संसार में होते हैं जिनमें मोक्ष पाने की शक्ति तो होती है पर कभी उसका व्यक्तिकरण नहीं कर पाता। शक्ति होने पर भी व्यक्तिकरण के लिए तद्योग्य निमित्त चाहिए और यदि वैसे निमित्त मिल भी जायें तो उपादान सशक्त नहीं होने से वह कार्य सम्पन्न नहीं हो पाता।

उपादान जहाँ सशक्त होता है तो कई बार स्वत: ही निमित्त मिलने लग जाते हैं। जैसे बीज में वृक्ष की कल्पना कर सकते हैं। लेकिन वर्तमान में बीज को वृक्ष नहीं बोल सकते। शक्ति की अपेक्षा से उसमें वृक्ष और फल सब कुछ छुपे हुए हैं। दूध में घी रूप शक्ति है। वह शक्ति कब बाहर आती है? जबकि उसके साथ वैसे निमित्त भी मिलें और उस प्रकार की प्रक्रिया की जाये तब घी रूप में उसकी अभिव्यक्ति होती है, तब एक अलग ही स्वाद मिलता है। घी को पाने के लिए दूध को तपाना पड़ता है, फिर खटाई डालकर जमाना पड़ता है और नवनीत बनाना पड़ता है फिर पुन: उसे तपाना पड़ता है तब वह घी बनता है। जैसे घी की शक्ति युक्त दूध पीकर भी आप घी का स्वाद नहीं ले सकते, वैसे वर्तमान में शुद्धात्मा का स्वाद नहीं ले सकते। इसी तरह बीज को आप जब भूमि में डालोगे तब उसके पूर्व उस भूमि को साफ सुथरी करनी पड़ेगी। कंकड़, पत्थर रहित करनी पड़ेगी। भूमि जल के द्वारा मृदु हो ताकि उसमें खाद डालकर उसकी रक्षा कर उसमें बीज अंकुरित हो सके और धीरे-धीरे वह वृक्ष रूप लेकर फल भी दे सके। ऐसी ही वर्तमान में इस आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति कह सकते हैं, परन्तु योग्य द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के बिना व्यक्तिकरण नहीं है, और निर्ग्रन्थ बने बिना उसका अनुभव नहीं कर सकते।

समयसार में आचार्य कुन्द-कुन्द स्वामी कहते हैं कि - बीज और वृक्ष की संतति की तरह जीव और कर्मों का परस्पर निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है। जीव के अशुद्ध परिणामों से पुद्गल वर्गणायें कर्म रूप परिणत हो जाती हैं तथा पुद्गल कर्मों के निमित्त से जीव के अशुद्ध परिणाम

होते हैं। फिर भी लक्षण रूप से जीव कर्म रूप नहीं होता तथा कर्म, जीव रूप नहीं होता। दोनों के अस्थायी सम्बन्ध रूप निमित्त से संसार चक्र चलता रहता है।

आत्मा अमूर्त है और कर्म मूर्त। अमूर्त आत्मा के साथ मूर्त कर्म का सम्बन्ध कैसे स्थापित होता है? इसके उत्तर में आचार्यों ने कहा है कि - कर्म पुद्गलों द्वारा आत्मा के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है और आत्मा के द्वारा कर्म पुद्गलों के स्वरूप में भी कोई परिवर्तन नहीं होता है। दोनों में संयोग कृत या सम्बन्ध कृत परिवर्तन अवश्य होता है। आत्मा का उपादान अपना है और कर्म पुद्गलों का अपना उपादान है। उपादान में कोई परिवर्तन नहीं होता है, केवल निमित्तों कृत परिवर्तन होता रहता है। आत्मा के उपादान को (अन्तरंग कारण को) कुछ परिवर्तित करने में कर्म निमित्त बन सकते हैं और कर्म पुद्गलों के कुछ परिवर्तन में आत्मा निमित्त बन सकती है। ज्ञान, दर्शन, सुख और शक्ति आत्मा के उपादान हैं। ये कभी नष्ट नहीं होते, कितने ही कर्म परमाणु लग जायें, इनमें लक्षण रूप परिवर्तन नहीं ला सकते। वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श गुण युत होना यह पुद्गल का उपादान है। आत्मा इनमें कोई परिवर्तन नहीं ला सकती है। कर्म का निमित्त मिलता है तो अमूर्त आत्मा व्यवहार से मूर्त रूप में कहलाने लग जाता है। आत्मा का मूर्त रूप जिस दिन पूर्ण रूपेण टूट जायेगा तब मात्र अमूर्त ही शेष रहेगा।

कर्मों का आत्मा के साथ सम्बन्ध होने से जो अवस्था उत्पन्न होती है, उसे बन्ध कहते हैं। इस बन्ध पर्याय में जीव और पुद्गल की एक ऐसी नवीन अवस्था उत्पन्न होती है जो न तो शुद्ध जीव में पायी जाती है और न शुद्ध पुद्गल में। जीव और पुद्गल अपने-अपने गुणों से सहित होते हुए भी एक नवीन अवस्था को प्राप्त होते हैं। राग-द्वेष युक्त आत्मा पुद्गल पुंज को अपनी ओर आकर्षित करता है। जिस प्रकार फोटोग्राफर चित्र खींचते समय अपने कैमरे को व्यवस्थित तरीके से रखता है और उस समय कैमरे के समीप आने वाले पदार्थ की आकृति लेन्स के माध्यम से प्लेट पर अंकित हो जाती है, उसी प्रकार राग-द्वेष रूपी पुद्गल पुंज आत्मा में विकृति उत्पन्न कर देते हैं, जो पुन: आगामी रागादि भावों को उत्पन्न करता है। पंचाध्यायी ग्रंथ में आचार्य लिखते हैं -

जीवस्याशुद्ध रागादि-भावानां कर्म कारणम् ।
कर्मणस्तस्य रागादि भावा: प्रत्युपकारिवत् ।।२/४१।।

अर्थात् - " जीव के राग-द्वेषादि अशुद्ध भावों का कारण कर्म है तथा उस कर्म का कारण रागादि भाव हैं। इस प्रकार भावकर्म तथा द्रव्यकर्म में परस्पर प्रत्युपकारीपना है।" वे परस्पर में निमित्त कारण हैं। कर्म के निमित्त से भाव होते हैं और भाव के निमित्त से कर्म बन्ध रूप अवस्था को प्राप्त होते हैं। अपने भाव से कारण भेद बनते हैं। एक वाटर टैंक बहुत बड़ा है जिसमें लबालब पानी भरा है, वह एक ही प्रकार का पानी है उसमें किसी भी प्रकार की क्वालिटी नहीं है। वह पानी पाइप के माध्यम से नीचे आ रहा है, उसी पाइप में एक आड़ा पाइप लगा है जिसमें पानी सीधा आ रहा है

जिसमें भी कोई क्वालिटी नहीं है इस पाइप में एक-एक कर आठ प्रकार से नल लगे हुए हैं, उनके मुख पर विशेष प्रकार की टेबलेट लगाई जाती है जिससे टच करके पानी आता है तो क्वालिटी बदल जाती है, उसमें से खट्टा, मीठा, खारा, कसैला, चर्परा, गर्म, ठण्डा, रंग-बिरंगा आदि रूप में पानी आ रहा है, उसी प्रकार कार्मण वर्गणा में क्वालिटी नहीं है, प्रति समय अनन्तानन्त कार्मण वर्गणाओं का बन्ध हो रहा है, जब वे वर्गणायें जिस भावों से टच होकर हमारी ओर खिचतीं हैं उसी प्रकार के कर्मों का बन्ध होता है।

**क्रमशः.........**

# समीक्षा : जैन धर्म में कर्म व्यवस्था

ग्रंथ का नाम : जैन धर्म में कर्म व्यवस्था

लेखक (प्रवचनकार) : प.पू. मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज

सम्पादन : डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर

पृष्ठ संख्या : 24

प्रकाशक : भगवान महावीर आचारण संस्था समिति
एम.आई.जी.-8/4, गीतांजलि काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद,
भोपाल (म.प्र.) - 462003
फोन : 0755-2673820, 2577882, 9425601161, 9425011357

मुद्रक : पारस प्रिन्टर्स, 207/4, साँईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल

मूल्य : उल्लेखित नहीं अर्थात निःशुल्क (डाक व्यय देय)

'जैन धर्म में कर्म व्यवस्था' पुस्तिका अपने कृषकाय रूप में एक महान ग्रंथ ही है। जो सरल भाषा में जैन धर्म की कर्म व्यवस्था को हृदयंगम कराने में अत्यन्त सफल रचना है। वस्तुतः प.पू. मुनि श्री आर्जवसागर जी के गहन चिंतन वाले प्रवचनों का संकलन ही 'जैन धर्म में कर्म व्यवस्था' है। आबालवृद्ध नर-नारी सभी जटिल कर्म व्यवस्था को सरलता से समझ सकता है। इस कर्म व्यवस्था को समझकर पाठक मिथ्यात्व, राग-द्वेष, कषायों से बचने का प्रयास कर सकता है। कार्मण वर्गणाओं को समझ सकता है। अष्ट कर्मों के स्वरूप के दर्शन कर सकता है। शुभ-अशुभ कर्म बन्धों को पुण्य-पाप परिणामों को समझ सकता है। अष्ट कर्मों के नाश करने की साधना कर कर्म मुक्त होने का उपाय सीख सकता है। पुस्तक पठनीय व संग्रहणीय है।

# सोलहकारण पर्व

*संकलन : श्रीमती सुशीला पाटनी*
*आर.के. हाउस, मदनगंज, किशनगढ़*

प्रतिवर्ष सोलहकारण पर्व भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर आश्विन कृष्णा प्रतिपदा तक मनाया जाता है। सामान्यतः यह पर्व 31 दिन का होता है।

इस पर्व में सोलहकारण भावनाओं का चिन्तन किया जाता है। शास्त्रों में 16 भावनायें कही गई हैं। इन भावनाओं से तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति का बंध होता है। इस कर्म प्रकृति के उदय से समवशरण एवं पंचकल्याणक रूप विभूति प्राप्त होती है।

इन भावनाओं का विवेचन इस प्रकार है :-

1. **दर्शनविशुद्धि :-** इस भावना का होना आवश्यक है। क्योंकि इसके न होने पर और शेष सबके अथवा कुछ के होने पर भी तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं होता है।

   दर्शन शब्द का अर्थ है यथार्थ श्रद्धान अर्थात् जिनेन्द्रदेव द्वारा बताये गये मार्ग का 25 दोषों से रहित और अंगों से सहित पूर्ण श्रद्धान करना ही दर्शनविशुद्धि भावना है।

2. **विनयसम्पन्नता :-** सम्यकदर्शन, ज्ञान, चारित्र एवं वीर्य की, इनके कारणों की तथा इनके धारकों की विनय करना तथा आयु में वृद्ध पुरूषों का यथायोग्य आदर करना विनयसम्पन्नता कहलाती है।

3. **शीलव्रतेषु अनतिचार :-** अहिंसा आदि पाँच व्रत हैं तथा इनके पालन में सहायक क्रोधादि का त्याग करना शील कहलाता है। व्रत और शीलों का निर्दोष रीति से पालन करना ही शीलव्रतेषु अनतिचार है।

4. **अभीक्ष्णज्ञानोपयोग :-** सदैव ज्ञानाभ्यास में लगे रहना अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग है। जो व्यक्ति निरन्तर धार्मिक ज्ञानाभ्यास करता है, उसके हृदय में मोह रूपी महान् अन्धकार निवास नहीं करता है।

5. **अभीक्ष्ण संवेग :-** सांसारिक विषय भोगों में डरते रहना अभीक्ष्ण संवेग है।

6. **शक्तितः त्याग :-** अपनी शक्ति को न छिपाते हुए आहार, औषधि, अभय, उपकरण आदि का दान देना शक्तितः त्याग है।

7. **शक्तितः तप** :- अपनी शक्ति को न छिपाकर मोक्षमार्ग में उपयोगी तपानुष्ठान करना शक्तितः तप है।

8. **साधुसमाधि** :- दिगम्बर साधु के तप में उपस्थित आपत्तियों का निवारण करना तथा उनके संयम की रक्षा करना, साधु समाधि है।

9. **वैयावृत्यकरण** :- गुणी पुरूषों की साधना में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न करना एवं उनकी सेवा सुश्रूषा करना, वैयावृत्यकरण है।

10-13. **अर्हत्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचन भक्ति** :- अरिहन्त-आचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन (शास्त्र) इन चारों में शुद्ध निष्ठापूर्वक अनुराग रखना ही अरिहन्त-आचार्य-बहुश्रुत-प्रवचन भक्ति है। बहुश्रुत का अर्थ उपाध्याय है। प्रवचन का अर्थ जिनवाणी है।

14. **आवश्यकापरिहाणि** :- सामायिक, चतुर्विंशतिस्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान और कायोत्सर्ग। इन छह आवश्यक क्रियाओं को यथाकाल अविच्छिन्न रूप से करते रहना आवश्यकापरिहाणि है।

15. **मार्गप्रभावना** :- अपने श्रेष्ठ ज्ञान और आचरण से मोक्षमार्ग का प्रचार-प्रसार करना मार्गप्रभावना है।

16. **प्रवचनवत्सलत्व** :- गाय के बछड़े की तरह साधर्मी जनों से निश्छल-निष्काम स्नेह रखना प्रवचनवत्सलत्व है।

## वर्षायोग : चातुर्मास - २००९

**संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज**

कुल : 29 (आचायश्रीजी+28 मुनिराज) तथा ब्रह्मचारीगण

- प्रत्येक रविवार एवं विशिष्ट पर्व के दिनों में आचार्यश्री का सार्वजनिक प्रवचन मध्याह्न 3 बजे से होता है।
- वर्तमान में आचार्यश्री से दीक्षित शिष्यों के मध्यप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, झारखंड, उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, राजस्थान, हरियाणा, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में चातुर्मास हो रहे हैं।
- चातुर्मास स्थली : श्री दिगंबर जैन सर्वोदयी तीर्थ, अमरकंटक, जिला अनूपपुर (म.प्र.)
- संपर्क सूत्र :- कार्यालय-07629-269450, 269550, अजयजी - 94253-31316, दीपकजी - 94253-44733, प्रमोदजी-94252-20709, मनीषजी-94255-31042

## परम पूज्य मुनिवर १०८ श्री आर्जवसागर जी महाराज के चातुर्मास २००९ हेतु अजयमेरू (अजमेर) पधारने पर अर्पित

# मंगल आराधना प्रसून

**रचयिता एवं गायक : संगीतरत्न प्रो. सुशील पाटनी 'शील', अजमेर**

ग्राम 'फुटेराकला' दमोह जिला, कुण्डलपुर महिमावान,
तात 'शिखरचंद' माता 'माया' गृह जनमा 'पारस' गुणखान।
पावन दसलक्षणों पर्व की, अष्टम तिथि सुखकारी थी,
आत्मधर्म साधन करने की घड़ियां मंगलकारी थी।
इसीलिए बचपन वय में था हृदय समाया त्याग धरम,
शिक्षा बी.ए. प्रथम वर्ष कर, किया मार्ग वैराग्य गमन।
अत: ब्रह्मचारी क्षुल्लक ऐलक दीक्षा धर क्रम क्रम से
नव-यौवन इक्कीस बरस में पाई मुनि दीक्षा गुरु से।
अजब बना संयोग, परस आतम को काय बनी सोना,
'सोनागिरी' में 'विद्यासागर' गुरु ने किया मुनि टोना।
रखा नाम 'आर्जवसागर' जो यथानाम गुणधारी है,
सरल, सहज, हितमित मृदुभाषी, त्रय-योग एकाकारी है।
पुण्य-योग अजमेर नगर का, धन्य यहां के नरनारी,
तब चरणों की रज-कण पाकर उपकृत है जनता सारी।
धरें कभी हम भी मुनि बाना 'शील' भावना भाते हैं,
मुनि श्री 'आर्जवसागर' के चरणों में शीष नवाते हैं।
मुनि श्री आर्जवसागर जी की जय जयकार कराते हैं।

संयोजक, श्री दि. जैन, संगीत मंडल, अजमेर
'निहाल निकुंज', ए-६२, छहरी योजना, अजमेर
मो.: 9829069663

डॉ. प्रोफेसर लक्ष्मीचंद्र जैन द्वारा कर्म सिद्धान्त विषयक करणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग विषयक जैन ग्रंथों की सामग्री पर भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA) ने प्रायः दस वर्षों तक जो कार्य करवाया गया, उसे सम्पूर्ण सम्पादित रूप से प्रकाशित किया जा रहा है। अभी तक करणानुयोग विषयक चार खंड निम्न रूप में उपलब्ध हैं :

Exact Sciences in the Karma Antiquity (Vol. 1-4)

इसके सिवाय दो खंड निम्न रूप में उपलब्ध हैं जो गोम्मटसार विषयक हैं -

Mathematical Sciences with Karma Antiquity (Vol. 1-2)

इनकी समीक्षादि इंटरनेट पर उपलब्ध है। Google पर देखिये lcjain/history of science

आगे दो और ग्रंथ हैं :-

(1) The Tao of Jaina Sciences, Revised Edition 2009 तथा (2) पद्मपुराण (हिन्दी-अंग्रेजी में), 2008 इन्हें अल्पतम मूल्य में, जो क्रयकर्ता देने में सक्षम हो, प्रदान किया जा सकता है -

**नोट :** 1. उपरोक्त सभी ग्रंथ (पद्मपुराण छोड़कर) सरल हिन्दी व अंग्रेजी अनुवाद सहित, मूल प्राकृत गाथाओं सहित तथा सरल गणितमय रूप में शोध छात्रों, विद्वानों तथा साधारण गृहस्थों, व्रतियों आदि के आगम अभ्यास हेतु रचा गया है। जो भी जैन एवं जैनेत्तर संस्थाएं अथवा विद्वान इनका सदुपयोग करना चाहते हों उन्हें भी ये ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किये जा सकते हैं, केवल **पोस्टेज खर्च** ही देय होगा।

2. आज के युग में गणित या कम्प्यूटर की महत्ता देखते हुए आगम ग्रंथों की गणितीय सामग्री में प्राचीन व अर्वाचीन रूप देते हुए इन ग्रंथों का निर्माण हुआ है। अब लब्धिसार, क्षपणासार के तीन खण्ड और निकलना शेष है - कार्य पूर्ण क्षमता के साथ निरंतर है। इन ग्रंथों को समझने के लिए कोई शिक्षक आदि की आवश्यकता भी नहीं है। यदि इस संबंध में विस्तृत और भी जानकारी लेना चाहें तो सी.डी., ई-मेल अथवा अन्य विधि द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

कृपया सम्पर्क करें :-

**डॉ. प्रोफेसर लक्ष्मीचंद्र जैन**
सचिव, गुलाबरानी कर्म विज्ञान संग्रहालय,
दीक्षा ज्वेलर्स के ऊपर, पुरानी बजाजी, सराफा, जबलपुर, (म.प्र.) 482 002
ई-मेल : lcjain25@rediffmail.com मोबाईल : 9425386179

# सम्यक् ध्यान शतक

*– मुनि आर्जवसागर*

**मंगलाचरण**

सिद्ध देव जिन श्रेष्ठ हैं, परमेष्ठी पद रूप।
नमता सम्यक् ध्यान में, बनूँ आप्त अनुरूप।।

**भूमिका**

पर पदार्थ संयोग से, कर्म–बंध संसार।
भोग तजे चिंता मिटे, ध्यान करें भव पार।।

**संसार का लक्षण**

कर्म–बंध गति आगति, होते जिसमें काम।
चारों गतियों में भ्रमण, जिसका भव है नाम।।

**मोक्ष का स्वरूप**

सर्व कर्म का नाश जब, जहाँ होय वह मोक्ष।
निर्ग्रन्थों को प्राप्त हो, सिद्ध बनाता मोक्ष।।

**भव्य का लक्षण**

रत्नत्रय–मय मोक्ष–मग, पाता है वह भव्य।
मोक्ष–मार्ग अरु मोक्ष को, पाता नहीं अभव्य।।

**धर्माधार दया**

वस्तुस्वभावरु धर्मदश, रत्नत्रय हैं धर्म।
दया धर्म आधार है, जिसके बिना अधर्म।।

**लक्ष्य और सोपान**

वस्तु–स्वभाव सु–लक्ष्य हो, सच्चा सौख्य स्वरूप।
दया आदि सोपान हैं, शिव मंजिल अनुरूप।।

**आत्महित कैसे?**

आतम–हित शिव सौख्य है, आकुलता से दूर।
रत्नत्रय से प्राप्त हो, आत्म–गुणों से पूर।।

*(टिप्पणी : मुनिश्री की भावना से कुछ पद्यों का पुनः प्रकाशन)*

*क्रमशः .........*

ग्रंथ समीक्षा

# सम्यक् ध्यान शतक

*- श्रीपाल जैन 'दिवा'*

संसार में मनुष्य का चंचल मन अनथक रूप से भटकता रहता है। दुश्चिंतन की आँधी में स्थिर नहीं रह पाता। ऐसे मर्कट मन को केन्द्रित करने के लिये ध्यान सशक्त माध्यम है। इसीलिए प.पू. मुनि श्री आर्जवसागर जी ने 'सम्यक् ध्यान शतक' पुस्तक में 15 वें दोहे में गागर में सागर भरते हुए कहा है -

मन पूरे जग में फिरे, एक जगह ना ध्यान ।
केन्द्रित निज में ध्यान तब, प्रगटे केवल ज्ञान ।।

निज में केन्द्रित होकर निज को ध्यावे तब केवल ज्ञान प्रगट होता है। अतः ध्यान ही केवल ज्ञान और मोक्ष का द्वार है।

'सम्यक् ध्यान शतक' लघु पुस्तिका में महान ग्रन्थों का ज्ञान समहित कर देना महाकवि आचार्य विद्यासागर जी एवं उनके शिष्यों के ही वश की बात है। इसे ग्रंथ ही कहा जाना चाहिए। जिसमें मंगलाचरण से मंगल प्रारम्भ होकर भूमिका, संसार का लक्षण, मोक्ष का स्वरूप, भव्य का लक्षण, लक्ष्य और सोपान, आत्म हित कैसे, ध्यान साधना हेतु चिन्तन, ध्यान की अवस्थाएँ, ध्यान के योग्य सामग्री, ध्यान हेतु द्रव्य, संहनन आसन, आहार, बाधक तत्व, साधन को लाभ, सुयोग्य अवस्थाएँ, ध्येय व साधना द्रव्य, ध्यान हेतु क्षेत्र, ध्यान हेतु काल, ध्यान हेतु भाव समता, संयम, सद्भावनाओं के प्रकार, आर्त्तध्यान, इष्टवियोग, अनिष्ट संयोग पीड़ा चिन्तवन, निदान, आर्त्तध्यान के गुण स्थान, रौद्रध्यान, हिंसानन्द, मृषानंद, चौर्यानन्द, परिग्रहानन्द, रौद्र ध्यान के गुण स्थान, धर्म ध्यान, धर्म ध्यान के भेद, आज्ञा विचय, अपाय विचय, विपाक विचय, संस्थान विचय, संस्थान विचय के भेद, पिण्डस्थ ध्यान, पंच धारणाएँ, पृथ्वीधारणा, अग्निधारणा, वायु और जलधारणा, तत्त्वधारणा, रूपस्थ ध्यान, रूपातीत ध्यान, धर्म ध्यान के स्वामी, शुक्ल ध्यान-पृथक्त्ववितर्कवीचार, एकत्व वितर्क अविचार, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती, व्युपरतक्रियानिवृत्ति, चौदहवें गुण स्थान का काल, शुक्ल ध्यान के गुण स्थान, अंतिम मंगल, प्रशस्ति, ऐसे 60 विषयों पर दोहे जैसे लघु छन्द में ध्यान सागर को कौशल के साथ भर दिया है। एक-एक छन्द मंत्र की महान शक्ति रखता है। जिसका पारायण कर भव्यजीव निज को ध्याने का अभ्यासी हो सकता है।

पुस्तक का आवरण गुरू-शिष्य की ध्यानावस्था का प्रत्यायन करते हुए बड़ा सुन्दर सार्थक लग रहा है। पुस्तक नित्य पाठ हेतु पठनीय, हृदयंगम कर निज का ध्यान करने हेतु प्रेरक मंत्र रूप है।

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति साधुवाद की पात्र है जिसने पुस्तक प्रकाशन का मंगल कार्य किया है। पुस्तक का मूल्य स्वाध्याय (आद्योपात पढ़ने तक एक वस्तु का त्याग) रखकर और पुण्य का कार्य किया है। पुस्तक निःशुल्क **( डाकव्यय देय )** प्राप्त की जा सकती है।

**प्राप्ति हेतु सम्पर्क** : भगवान महावीर आचारण संस्था समिति, एम.आई.जी.-8/4, गीतांजलि काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) - 462003 फोन : 0755-2673820, 2577882, 9425601161, 9425011357

# आचार्य ज्ञानसागर ध्यान केन्द्र-दीक्षायतन अजमेर

गुरुनाम गुरु परमपूज्य आचार्य श्री 108 ज्ञानसागरजी महाराज की पारखी दृष्टि ने युवा दीक्षार्थी विद्याधर को पहचान कर विद्याधर से मुनि विद्यासागर बनाया। ऐसी अजयमेरु की धर्मधरा (अजमेर) उन विद्यासागर मुनि को पाकर कृतकृत्य हुई जिन्होंने कालान्तर में आचार्य और फिर सन्त शिरोमणी आचार्य विद्यासागर बनकर हजारों मोक्षमार्गियों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। उन आचार्य को जिस स्थान पर ऐसे अनमोल रत्नमयी संस्कार मिले वह दीक्षा स्थल वर्तमान और युगों-युगों तक मोक्षमार्गियों के लिए प्रेरणा स्थल बन सके ऐसी भावना के साथ पूज्य आर्यिका 105 पूर्णमति माताजी के ससंघ सानिध्य में और सन्त शिरोमणी आचार्य श्री के आशीर्वाद से ''आचार्य ज्ञानसागर ध्यान केन्द्र'' का शिलान्यास दिनांक 11.05.09 को किया गया। इसी क्रम में सन्त शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 सुधासागर जी महाराज तत्पश्चात् मुनि श्री 108 चिन्मयसागर ज ी महाराज ने अपने अजमेर प्रवास के दौरान आचार्य श्री ज्ञानसागर ध्यान केन्द्र (सं.शि. आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी की दीक्षा स्थली) को शीघ्रताशीघ्र विकसित करने के लिए अपनी भावनाएं व्यक्त कीं और अपना शुभाशीर्वाद देकर प्रेरित किया। इसी क्रम में सन्त शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ने गुरुवर की दीक्षा स्थली को अपने अजमेर चातुर्मास प्रवास में निकट जाकर देखा और देखते ही अपने भावों की अभिव्यक्ति दिनांक 18.09.09 की धर्म सभा में अपने भावों को प्रकट करते हुए बड़े ही हृदय स्पर्शी उद्बोधन के माध्यम से उद्बोधित करते हुए समस्त दिगम्बर जैन समाज अजमेर को मार्गदर्शन देते हुए बताया कि अनमोल समय व्यर्थ में निकला जा रहा है, मोक्षमार्ग के प्रभावक गुरुवर सन्त शि. आचार्य श्री विद्यासागर जी के इस दीक्षा स्थान के माध्यम से जो अजमेर को ख्याति मिली है, उसका महत्व साधारण व्यक्ति की समझ से बाहर की बात है। दीक्षा स्थान के महत्व के बारे में मुनि श्री ने बताते हुए कहा कि जब मैं प्रथम बार गुरुदेव के दीक्षा स्थल पर उन पवित्र वर्गणाओं को ध्यान करने का भाव करके गया तो ये पाया कि वहाँ पर कार्य की प्रगति आशानुरूप नहीं है। इससे मुनि श्री का मन द्रवित हो उठा फलस्वरूप पूज्य श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ने तत्काल ही सोनी जी की नसियाँ, अजमेर चातुर्मास स्थल पर आयोजित धर्मसभा में भाव विभोर होकर गुरुदेव का स्मरण करते हुए उस पावन स्थान का समाज को महत्व बताया जिससे उपस्थित सभी जिनधर्मी एक साथ एक आवाज में महाराज जी के उद्बोधन से प्रतिज्ञारत हुए और सभी ने यह संकल्प लिया कि हम अजमेर के सभी जिनधर्मी आपके मार्गदर्शनानुसार अतिशीघ्र सन्त शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के मोक्षमार्ग की जननी जन्म भूमि को एक ऐतिहासिक रूप प्रदान करने का प्रण लेते हैं, जिससे वर्तमान एवं आने वाली भावी पीढ़ी के लिए मोक्षमार्ग की प्रेरणा देने वाली इस पवित्र धर्मधरा को पूज्यनीय बनाने में कोई कसर नहीं रखेंगे और इनका शुभ नाम दीक्षायतन रखना चाहिए जिससे भव्यों को दीक्षा लेने की प्रेरणा मिल सके और संक्षिप्त शब्द होने से बोलने और पहुँचने में सुविधा हो सके।

संकलनकर्ता : श्रीमती साधना जैन, अजमेर

# श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ सेवा समिति, अजमेर का गौरवमय स्वर्णिम इतिहास

*नवरतनमल पाटनी, महामंत्री*

कई शताब्दियों के अंतराल के बाद करीब 75 साल पहले सन् 1933 में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर जी महाराज ससंघ का मंगल पदार्पण धर्मनगरी अजमेर में हुआ। उनके सानिध्य में मंगल आशीर्वाद के साथ इस मुनि संघ सेवा समिति का जन्म रायबहादुर सेठ सा. टीकमचन्दजी सोनी की अध्यक्षता में हुआ। उसके बाद चारित्र चक्रवर्ती आचार्य महाराज के संघस्थ आचार्यकल्प चन्द्रसागर जी महाराज का चातुर्मास हुआ। उन्हीं के आज्ञानुसार इस विश्व प्रसिद्ध 82 फुट उतुंग मानस्तम्भ का निर्माण कराया गया जो कि जैन जगत में अद्वितीय है। इसके बाद समिति की अध्यक्षता सर सेठ भागचन्दजी सोनी ने करीब 40 साल तक संभाली। उनके कार्यकाल में भारत वसुन्धरा के सभी महान आचार्यों ने इस धर्म नगरी को अपने पावन चरणरज से पवित्र किया। करीब 50 साल पहले चारित्र चक्रवर्ती महाराज के द्वितीय पट्टाधीश शिवसागर महाराज ससंघ का चातुर्मास हुआ। करीब 45 वर्ष पहले वात्सल्य रत्नाकर विमलसागर जी महाराज ससंघ का चातुर्मास हुआ। गणिनी आर्यिकारत्न सुपार्श्वमति माताजी का गरिमापूर्ण चातुर्मास हुआ। आचार्य 108 श्री महावीर कीर्तिजी महाराज का भी प्रवास रहा। आचार्यरत्न देशभूषणजी महाराज ससंघ का ऐतिहासिक प्रवास यहां हुआ। उस संघ में ब्रह्मचारी विद्याधरजी भी थे। करीब 40 साल पहले आचार्य धर्मसागर जी महाराज के चातुर्मास में आर्यिकारत्न शुभमति माताजी की ऐतिहासिक दीक्षा 20 साल की भरी जवानी में धर्मनगरी अजमेर में हुई। सेठ साहब की अध्यक्षता में ही आचार्यरत्न ज्ञानसागरजी महाराज द्वारा 1968 में ब्रह्मचारी विद्याधर की मुनि दीक्षा महोत्सव पूरे ठाठ-बाठ से हाथी घोड़ें, बैण्ड बाजे के साथ कराई गई। जो आज पूरे भारत वर्ष में सन्त शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी के नाम से अपने करीब 300 शिष्यों के साथ जिन शासन का गौरव बढ़ा रहे है।

सन् 1980 में ऐलाचार्य विद्यानन्दजी महाराज का श्रवणबेलगोला जाते समय प्रवास हुआ। इसके बाद इस समिति की अध्यक्षता श्रीमान भागचन्दजी गदिया साहब ने संभाली एवं महामंत्री का पद नवरतनमल जी पाटनी ने संभाला जो अभी भी महामंत्री पद पर कार्य कर रहे हैं। इनके कार्यकाल में सन् 1984 में धर्मसूर्य आचार्य धर्मसागरजी महाराज ससंघ का 25 पिच्छिकाओं के साथ ऐतिहासिक चातुर्मास हुआ जिसमें आचार्यकल्प श्रुतसागरजी महाराज, अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी अजितसागरजी महाराज, युवा वर्द्धमानसागरजी महाराज, पूज्य गणिनी आर्यिका जिनमति माताजी साथ में थीं। इसी चातुर्मास में सुभाष उद्यान में तीन मुनि दीक्षायें बीस हजार के विशाल जनसमूह की उपस्थिति में हुईं। इसके बाद तपस्वी सम्राट आचार्य सन्मतिसागरजी महाराज ससंघ का ऐतिहासिक प्रवास हुआ उसके बाद चारित्र

चक्रवर्ती आचार्य महाराज के पट्टाधीश आचार्य श्री 108 वर्द्धमानसागरजी महाराज ससंघ का चातुर्मास पूरी धर्मप्रभावना के साथ हुआ।

सन् 1994 में मुनि 108 श्री सुधासागरजी महाराज ससंघ का ऐतिहासिक चातुर्मास अजमेर में हुआ। उसी चातुर्मास के भाद्रपद माह में विशाल श्रावक संस्कार शिविर एक हजार शिविरार्थियों के साथ हुआ एवं ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र नारेली का बीजारोपण हुआ जो आज गौरवमय तीर्थ के रूप में विकसित हो चुका है। ज्ञानोदय तीर्थक्षेत्र पर आर.के. मार्बल्स, किशनगढ़ द्वारा निर्मित आदिनाथ जिनालय एवं मनोहर उद्यान एवं श्रावक के षटआवश्यक की विद्युत चलित झांकिया पूरे भारवर्ष में जिन शासन का गौरव बढ़ा रहा है एवं पंचकल्याण के लिए पूर्णरूपेण तैयार है जो कि आचार्य भगवन्त विद्यासागर जी महाराज के सम्पूर्ण संघ सानिध्य का प्रतीक्षारत है।

इसके बाद प.पू. मुनिराज क्षमासागरजी महाराज का ऐतिहासिक प्रवास हुआ उन्हीं के सानिध्य में पार्श्वनाथ कॉलोनी में जिनमन्दिरजी की प्रतिष्ठा का महोत्सव सम्पन्न हुआ। सन् 2001 में क्रान्तिकारी संत तरूणसागरजी महाराज का ऐतिहासिक चातुर्मास यहां पर हुआ जिसमें पटेल मैदान में 10 दिनों तक विशेष धर्मसभा हुई जिसमें 10 हजार जैन-अजैन श्रद्धालुओं की उपस्थिति रहती थी। सन् 2005 में पूर्णमति माताजी ससंघ का पूरी धर्मप्रभावना के साथ विहार एवं प्रवास कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सन् 2007 में परमपूज्य मुनिराज चिन्मयसागरजी महाराज ससंघ का ग्रीष्मकालीन प्रवास यहां हुआ उनकी प्रेरणा से सकल दि. जैन समाज का एक संगठन श्री दिगम्बर जैन महासंघ को प्रेरणा मिली।

विगत पांच साल से निरन्तर हर साल आर्यिका एवं मुनि संघों के चातुर्मास इस समिति द्वारा पूरी धर्मप्रभावना के साथ हो रहे हैं। इसी श्रृंखला में इस साल परम पूज्य धर्मप्रभावक मुनिराज श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ससंघ का चातुर्मास सिद्धकूट चैत्यालय, सोनीजी की नसियाँजी में हो रहा है। इस चातुर्मास का विशेष आकर्षण षोडशकारण व्रतानुष्ठान दिनांक 5 अगस्त से 5 सितम्बर तक पूरे ठाठ-बाठ से संगीतमय पूजा एवं शुद्ध आहारपूर्वक सम्पन्न हुआ। एवं 24 अगस्त से 3 सितम्बर तक श्रावक साधना संस्कार शिविर भी 200 शिविरार्थियों के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें तमिलनाडू, महाराष्ट्र, भोपाल, दमोह, ग्वालियर एवं राजस्थान के जयपुर, केकड़ी, सरवाड, नसीराबाद के शिविरार्थियों ने भाग लेकर भारी धार्मिक संस्कार प्राप्त कर अपना जीवन धन्य किया है एवं शिविर समापन पर विशेष शोभायात्रा पूरे गाजे बाजे घोड़ो बग्गियों के साथ प.पू. मुनिराज ससंघ के सानिध्य में निकाली गई। इस चातुर्मास में बच्चे-बच्चियों को धार्मिक संस्कार देने हेतु श्री ऋषभदेव पाठशाला का भी शुभारम्भ श्री सिद्धकूट चैत्यालय में कराया गया। जिसमें 180 बच्चे-बच्चियां ज्ञानार्जन कर रहे हैं। आगे भी कई धार्मिक आयोजन जैसे जैन प्रतिभा कवि सम्मेलन, कंठ पाठ प्रतियोगिता आदि कार्यक्रम भी मुनिराज श्री के मंगल आशीर्वाद से सम्पन्न होंगे।

नवरतनमल पाटनी, महामंत्री

# पर में सुख ढूंढ़ा

मुनिश्री आर्जवसागर

पर में सुख मान आत्म ने,
पर में ही सुख ढूँढा है,
जड़ में न चेतन को सुख है,
भ्रम में आतम भूला है ।।1।।

तन को है मन भर के धोया,
खूब सजाया सोया है।
फिर भी यह तन साथ गया क्या?
मिट्टी में तन खोया है ।।2।।

तरह-तरह के भोज्य सभी वे,
इन तन को खिलवाये थे।
फिर भी तन से धोखा खाकर,
नहीं सम्हल, जग पाये थे ।।3।।

अध्यातम की गंगा में जब,
डूबे थे, तब तन का रूप।
शुद्ध हृदय में भाया न जब,
तभी रुचा फिर चेतन रूप ।।4।।

रमणी, रानी देवी में जो,
अनादि से थी सुख की आश ।
छोड़ी इक दिन, आत्मरमण कर,
गुण का आलिङ्गन अब प्यास ।।5।।

ऐसे देखो आत्म समाधि,
में योगी मन लीन हुआ ।
अपने गुण की सही सम्पदा,
को ही उसने तभी छुआ ।।6।।

आत्मरमण ही मोक्ष धाम का,
कर्म निर्जरा का साधन ।
आत्मरमण ही लक्ष्य हमारा,
वही पूर्ण सुख है पावन ।।7।।

अमित सद्गुण वैभव है जहँ,
आर्जवता सोपान रहा।
वही मोक्ष मंगल है उत्तम,
वही शरण आराम रहा ।।8।।

वही शरण आराम रहा ।

*रचनाकाल जनवरी २००९, स्थल-भिण्ड (म.प्र.)*

# आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव

*डॉ. अजित कुमार जैन*

गतांक से आगे ..............

जहाँ एक ओर उदारीकरण एवं वैश्वीकरण से ब्रांड व फैशन युक्त स्वतंत्र जीवन शैली (लाइफस्टाइल) को अपनाने से, मनोरंजन करने, बाहर खाने, फिटनेस सेंटर जाने, बेहतर दिखने एवं बेहतर महसूस करने के उपायों को अपनाने से तथा एडवांस्ड शारीरिक सुख और आराम देने के साधनों को अपनाने में खर्च एवं कर्ज, दोनों बढ़ने लगे हैं अर्थात आमदनी व खर्च में असंतुलन पैदा होने से बजट फेल होने लगे हैं। वहीं दूसरी ओर शारीरिक श्रम के स्थान पर मानसिक श्रम बढ़ने लगा है। इस प्रकार से आम जिन्दगी तेज रफ्तार एवं तनावपूर्ण हो गई है।

जंक एवं फास्ट-फूड अपनाने के अन्तर्गत कोल्ड ड्रिंक्स, पिज्जा, हाट-डाग, ब्रेड, बिस्किट, नान-खटाई, कुकी, केक, कुरकुरे, अंकल चिप्स, नूडिल, मँचूरियन, सैंडविच, पकोड़े, तली चीजें आदि खाने के शौक या आदतें खाने में शामिल हैं। रेडीमेड फूड के अन्तर्गत कुछ दैनिक उत्पादों में जूस, नमकीन, मिठाईयाँ, जैम, सास, अचार, मुरब्बे आईस्क्रीम आदि शामिल हैं। जंक या फास्ट फूड व कोल्ड ड्रिंक्स से बच्चे व किशोर मोटापे, मधुमेह तथा अन्य बीमारियों की चपेट में आने लगे हैं। इसी प्रकार आयतित प्रिजर्वड एवं प्रासेस्ड फूड (खाने योग्य पदार्थो), तथा डिब्बा बन्द (पैक्ड) जूस में कृत्रिम रंगों, मिलावटी खाद्य सामग्री, साथ ही विटामिन्स, फाइबर्स और एन्टीआक्सीडेंट की मात्रा भी बहुत कम पाये जाने तथा प्रिजर्वेटिव्स केमीकल्स का जमकर उपयोग होने से हृदय गति तेज होना, कॉलेस्ट्रोल में वृद्धि, रक्तचाप बढ़ना, हार्मोन्स में असंतुलन, पाचन संबंधी दिक्कतों, एसिडिटी, थकान, मोटापा बढ़ना, तथा दांतों की सड़न की सम्भावना बढ़ने लगी है। **पश्चिम देशों में फास्ट फूड पर प्रतिबन्ध लगाया जाता है।** अमेरिका में अब जंक व फास्ट फूड तथा कोल्ड ड्रिक्स पर प्रतिबन्ध लगने लगा है। वहाँ मोटापा महारोग की तरह समस्या बनता जा रहा है। इसी के दृष्टिगत जहाँ माता-पिता बच्चों के स्कूलों के स्कूल के टिफिन में अब ताजे फल, सलाद, गेहूँ के आटे से बनी ब्रेड आदि देने लगे हैं, वहीं स्कूलों के केंटिनों में अधिकारी शीतल पेय, पिज्जा, बर्गर, फ्रैंच फ्राई, हॉट-डॉग, बर्गर, न्यूडल्स आदि की बिक्री पर प्रतिबन्ध लगाने जा रहे हैं। स्नैक्स, जंक व फास्ट-फूड, कोल्ड ड्रिंक्स, जैसे एफएमसीजी (फूड) का यंगस्टर्स एवं बच्चों में गैट-टु-गैदर व ट्रीट देने का प्रचलन अत्याधिक देखने को मिल रहा है जिसके फलस्वरूप स्वास्थ्य का भरपूर नुकसान हो रहा है। स्नैक्स से वजन बढ़ना व चिड़चिड़ापन, चॉकलेट से मोटापा व एजिंग, सॉफ्ट ड्रिंक्स से चिड़चिड़ापन व

पानी की कमी, चीज़ पिज्जा से नर्वस सिस्टम पर असर, बेकरी प्रोडक्ट्स से मोटापा व पाचन में दोगुना समय लगना आदि के नुकसान शामिल हैं।

कालेज हो या स्कूल, घर हो या दफ्तर एफएमसीजी (फूड) का क्रेज कभी कम नहीं होता है। राह चलते, जब देखो तब कोई बच्चा या टीनएजर चिप्स और कुरकुरे जैसे स्नैक्स के साथ कोल्ड ड्रिंक्स का मजा लेता दिखाई दे जाता है। जीभ को स्वाद देने तथा स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने का सिलसिला शुरू हो जाता है। हर कोई यह जानता है कि इन चीजों को ज्यादा मात्रा में खाने से मोटापा व ब्लडप्रेशर जैसी समस्या को आमंत्रित करना है। फिर भी हर कोई इनको खाता है। पहले ऐसे फूड प्रोडक्ट्स को लोग यात्रा के समय या नास्ते के समय प्रयोग करते थे। लेकिन अब ये फूड प्रोडक्ट्स रोजाना के नास्ते और यहां तक कि खाने में भी शामिल हो गये है। कई घरों में बच्चे लंच या डिनर के साथ एक चिप्स का भी पैकेट खोल लेते हैं। कुछ ही यंगस्टर्स लंच की बजाय तथा लंबी सिटिंग की पढ़ाई की वजह से हमेशा स्पाइसी स्नैक्स अपने पास रखना पसंद करते हैं। डाइटीशियन्स के अनुसार स्पाइसी स्नैक्स ज्यादातर मैदे या ऐसे प्रिजर्वेटिव के साथ मिलकर बने होते हैं, जिनको पचने में साधारण खाने से ज्यादा समय लगता है। इनका ज्यादा सेवन फिजिकल हेल्थ के साथ मैंटल हैल्थ के लिये बहुत नुकसानदायक है ।

चॉकलेट कैन्डीस अब बच्चों के साथ यंगस्टर्स की लाइफस्टाइल में डेली स्वीट्स की तरह शामिल हो गया है। टी.वी. पर दिखाये जाने वाले विज्ञापनों में बुजुर्गो को भी मीठे से आमतौर पर चॉकलेट ही पंसद आते हैं। ऐसी चीजों का दिन में कितनी बार खाना होता है इसका अनुमान लगाना कठिन होता है।

नई पीढ़ी वाले ऐसे परिवारों में, जो कॉल सेंटरों, साफ्टवेयर एवं कम्प्यूटर इंजीनियर्स, मैनेजमेंट आदि जैसे आधुनिक क्षेत्रों में काम कर रहे हैं, उन परिवारों में अचानक ज्यादा पैसे की आवश्यकता के साथ वहाँ की जीवन शैली भी प्रवेश कर जाती है। इसके फलस्वरूप जिसे हम अनावश्यक मद मानते हैं वही इस जीवन शैली में आवश्यक मद बन जाता है। दोनों, पति-पत्नी, रोजगार वाले एकल परिवारों में तो बाहर खाना अब दैनिक चर्या का हिस्सा होता जा रहा है। एकल परिवारों के अलावा बड़े शहरी परिवार भी समय-समय पर बाहर खाने की आदत के शिकार हो रहे हैं। इसे देखकर घर में बड़े हो रहे बच्चों में भी बाहर खाने की इच्छा को जीवन का स्वाभाविक हिस्सा मानने की मानसिकता बन रही है। इस प्रकार समाज का विकास ही बढ़ते खर्च की प्रवृत्ति के अनुरूप हो रहा है।

**(साभार : ''आर्थिक विकास एवं हिंसात्मक आचार विचार-आर्थिक उदारीकरण एवं वैश्वीकरण के संदर्भ में विशेष अध्ययन'' शोधग्रंथ)**

क्रमशः .......

# रत्नत्रय उपहार

डॉ. रमेश कुमार जैन, ग्वालियर

ना चाहूँ में सोना चाँदी न चाहूँ रत्न भण्डार।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

ना चाहू संसार का वैभव ना चाहूँ स्वर्ग का ताज ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

सच्चा श्रावक मुझे बना दो, अष्ट मूल-गुण साथ ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

सात तत्व श्रद्धान कराना भेद ज्ञान के साथ ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

मोह राग अरु दोष भगाना, कर्म लब्धि के साथ ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

मिथ्यातम का नाश कराना सम्यग्दर्शन साथ ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

पिछी कमंडल मुझको देना मूल गुणों के साथ ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

मोक्षमार्ग पर मुझे चलाना दश धर्मों के साथ ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

संयम तप अरु ध्यान कराना समता रस के साथ ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

हर विवाद का हल करवाना स्याद्वाद के साथ ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

मरण समाधि प्रभु चरणों में णमोकार के साथ ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

घाति अघाति कर्म नशाना मोक्ष महल दे साथ ।
आर्जवसागर दीजिये रत्नत्रय उपहार ।।

मो.: 9406983442

# अजमेर में यान्त्रिक कत्लखाने के न खोले जाने पर

**सांसद श्री सचिन 'पायलट', पुष्कर विधायक श्रीमती नसीम अख्तर 'इंसाफ' व अन्य का मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के सान्निध्य में भारतीय जैन मिलन व समस्त जैन समाज द्वारा स्वागत**

## अभिनंदन पत्र

**श्रीमान युवा सांसद सचिन पायलट** केन्द्रीय मन्त्री, दूरसंचार मन्त्रालय, दिल्ली का आज अभिनन्दन करते हुए हम अपने आपको अत्यन्त गौरान्वित महसूस कर रहे हैं कि आप जैसे ऊर्जावान तेजस्वी युवा शक्ति के नेतृत्व को अहिंसक भारतवासी नहीं नकार सकते। भगवान महावीर स्वामी एवम् राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की अहिंसा की पावन देशना के मन्त्र को पूरे विश्व ने स्वीकार किया है। इस अहिंसा के मन्त्र के माध्यम से पूरे विश्व को अहिंसा का सन्देश देते हुए विश्व को शान्ति एवम् अहिंसा का मार्ग दिखलाया है, उसी क्रम में आपने इन्हीं महापुरूषों का अनुगमन करते हुए अजमेर की पावन भूमि पर खुलने वाले यान्त्रिक बूचड़खाने को अपनी आवाज बुलन्द कर केन्द्र सरकार, राज्य सरकार व स्थानीय प्रशासन पर अपने ऊर्जावान और प्रभावी इच्छा शक्ति के माध्यम से दबाब डालकर हमेशा हमेशा के लिए निरस्त करवाकर अपना नाम इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जाने का पवित्र कार्य किया है। इसके लिए समस्त अजमेर का अहिंसक समाज एवम् भारतीय जैन मिलन आपका हार्दिक अभिनन्दन वन्दन करती है, सदैव स्वर्णिम एवम् उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए।

सादर!

भारतीय जैन मिलन शाखा, अजमेर

# गाय को राष्ट्रीय पशु का दर्जा मिले

***मुनि श्री आर्जवसागर***

अहिंसा के इस देश में, देशवासियों को आज गाय जैसे पशुओं पर भी दया का भाव नहीं आता है। पूरे विश्व में मांसाहार के विरुद्ध शाकाहार की मशाल जागृति की ओर है। विश्वप्रसिद्ध सेठ साहब की नसियां में चातुर्मास-रत मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ने आशीर्वाद लेने पहुँचे केन्द्रीय सूचना एवं प्राद्योगिकी संचार राज्य मंत्री सचिन पायलेट से गाय को राष्ट्रीय पशु का दर्जा दिलाये जाने की बात कहीं। पायलेट के साथ आये कांग्रेसी नेता प्रकाश गदिया, कमल गंगवाल आदि ने भी मुनिश्री से आशीर्वाद लिया। ट्रस्टी निर्मलचंद सोनी व प्रमोद सोनी ने पायलेट का साफा व शॉल द्वारा स्वागत किया। मुनिसंघ सेवा समिति के सदस्यों ने सेठ साहब की नसियां का चित्र पायलेट को भेंट किया।

साभार : अजयमेरू टाइम्स पाक्षिक, अजमेर, 16 अगस्त 09

# अजमेर नगर वर्षायोग की अपूर्व ऐतिहासिक धर्म प्रभावना

मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ससंघ को अजमेर की ओर विहार कर चातुर्मास करने हेतु श्री दिगम्बर जैन मुनि संघ सेवा समिति द्वारा चार बार जयपुर जाकर निवेदन कर श्रीफल चढ़ाये गये।

मुनि श्री ने मौजमाबाद, दूदू, विहार करते हुए किशनगढ़ में 24 जून को प्रवेश किया एवं वहाँ पर मुनिश्री के सानिध्य में संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज का दीक्षा जयन्ती दिवस का कार्यक्रम हर्षोल्लास से मनाया गया। धर्म नगरी किशनगढ़ में ही ब्रह्मचारी हरेश जी को क्षुल्लक दीक्षा मुनिश्री के कर कमलों द्वारा दी गई और उन्हें क्षुल्लक हर्षितसागर नाम दिया। इस भव्य ऐतिहासिक कार्यक्रम में उद्योगपति श्री अशोक पाटनी, पं. मूलचन्द लुहाड़िया, दीपचन्द चौधरी, आदि एवं किशनगढ़ व अजमेर जिले से कई गणमान्य श्रावकगण उपस्थित थे।

अजमेर वासियों के पुण्य उदय से दिनांक 7 जुलाई को मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज का ससंघ मंगल प्रवेश अजमेर नगर में हुआ। इस मंगल प्रवेश का जलूस जयपुर रोड, गाँधी भवन, चुड़ी बाजार, नया बाजार, आगरा गेट होते हुए विश्व प्रसिद्ध सिद्धकूट चैत्यालय सोनीजी की नसियाँ पहुँचा। शहर के प्रमुख मार्ग मुनिश्री के जयघोष से गुंजायमान हो रहे थे। श्रावकगण मंगल गीत गाते हुए मुनिश्री के साथ चल रहे थे पूरा नगर मुनिश्री के मंगल प्रवेश से प्रफुल्लित हो गया।

12 जुलाई 2009 का यह मंगल दिवस अजमेर के इतिहास में कभी न भुलाए जाने वाले संस्मरण के रूप में जुड़ गया। मुनिश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के पावन वर्षायोग के मंगल कलश की स्थापना आज प्रातः 8.30 बजे सोनीजी की नसियाँ में हुई। कलश की स्थापना के आकर्षण का केन्द्र 5 कलश थे, जिनको रत्नत्रय कलश, प्रवचन कलश, धर्मप्रभावना कलश, अतिथिसत्कार कलश एवं पुरस्कार कलश के नाम से सुशोभित किया गया। मुख्य कलश लेने का सौभाग्य लेखचन्द गदिया को, व अन्य चार कलश लेने का सौभाग्य टीकमचन्द गदिया, प्रफुलचन्द गदिया, अशोक टोंग्या, त्रिलोकचन्द सोनी को मिला।

कार्यक्रम की शुरुआत में कनक दीदी ने मंगलाचरण किया, युवा रत्न प्रमोदचन्द सोनी ने ध्वजारोहण किया, दीप प्रज्वलन पदमचन्द गंगवाल ने व मुनिश्री के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य सूरत से पधारे उद्योगपति नरेश भाई को मिला एवं पं. मूलचन्द लुहाड़िया भी पुण्यार्जक बने। मुनिश्री को सुरेश पाटनी, प्रमोद जैन, सुशील बड़जात्या, अशोक कासलीवाल ने शास्त्र भेंट किये। आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज, ज्ञानसागर जी महाराज एवं विद्यासागर जी महाराज के चित्रों का अनावरण सुनील सेठी द्वारा किया गया।

मुनिश्री द्वारा प्रातः 8.00 बजे प्रतिदिन ध्यान पर आधारित प्रवचन श्रृंखला प्रारम्भ हुई जिसमें अजमेर नगर वासियों ने उत्साह से भाग लेकर पुण्य लाभ प्राप्त किया।

मुनिश्री के आशीर्वाद व प्रेरणा से मोक्ष सप्तमी पर्व पर सोनी जी की नसियाँ में श्री दिगम्बर जैन ऋषभदेव जैन आगम पाठशाला प्रारम्भ की गई जिसकी 150 छात्र-छात्राएँ एवं 10 प्रशिक्षित अध्यापिकाओं द्वारा विधिवत् शुरुआत की गई जिसमें तीन कक्षाओं में छात्र-छात्राओं को विभक्त किया गया। प्रथम आचार्य शान्तिसागर जी ग्रुप, द्वितीय आचार्य ज्ञानसागर जी ग्रुप, एवं तृतीय आचार्य विद्यासागर जी ग्रुप का नाम दिया गया।

पूज्य मुनि श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज के परम सानिध्य में पर्वराज षोडशकारण व्रत विधान महोत्सव दिनांक 5 अगस्त 2009 को आयोजित किया गया। मंगल कलश की स्थापना प्रातः 9.00 बजे विमलचन्द, विनयचन्द और विजयकुमार सोगाणी द्वारा की गई। अशोक जैन शाहबजाज द्वारा सामूहिक 32 दिवसीय पूजन हेतु पूजन द्रव्य का दान दिया गया। करीब 150 लोगों ने अजमेर नगर में प्रथम बार सामूहिक रुप से शील, संयम से कुएँ का जल एवं मर्यादित आहार लिया। एक आहार व एक उपवास अथवा एकासन पूर्वक 32 दिवसीय षोडशकारण व्रत अनुष्ठान महोत्सव संगीतमयी पूजन एवं भक्ति के साथ मनाया। मुनिश्री ने तीर्थोदय काव्य के माध्यम से एवं सोलह भावनाओं पर आधारित प्रवचन श्रृंखला से सभी श्रावकगणों का धर्म मार्ग की ओर मुख मोड़ दिया।

रक्षा-बन्धन के दिन शुरू हुए इस पावन विधान महोत्सव में प्रातः अभिषेक व शान्तिधारा की गई। मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज ने विष्णु कुमार मुनिराज की कथा के माध्यम से उपदेश दिया कि जिस तरह विष्णु कुमार मुनिराज ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए 700 मुनियों को उपसर्ग से बचाया। हमें भी देव-शास्त्र-गुरु के सम्मान व रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। गदिया परिवार द्वारा विष्णुकुमार मुनिराज की विशेष पूजन करके 700 नारियल गोलों के साथ अर्घ समर्पित किये गये। जिसमें अजमेर समाज के सभी श्रावकों ने हिस्सा लिया। सभी श्रावकों ने एक-दूसरे की कलाई पर धर्म रक्षा का संकल्प सूत्र बांधा।

दशलक्षण पर्युषण पर्व के सुअवसर पर संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की दीक्षा एवं तप स्थली ऐतिहासिक धर्म नगरी अजमेर की सोनीजी की नसियाँ में मुनिश्री आर्जव सागर जी के सानिध्य में श्रावक साधना संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में तमिलनाडू, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व राजस्थान के अजमेर, नसीराबाद, केकड़ी, किशनगढ़, साँवर, सरवाड आदि स्थानों से पधारे सैकड़ों श्रावकों ने ज्ञानार्जन व धर्म लाभ प्राप्त किया। इस शिविर के मंगल कलश की स्थापना करने का सौभाग्य संजयकुमार महतिया परिवार को मिला। पर्युषण पर्व में प्रातःकाल 8.30 बजे मुनिश्री के मुखारबिन्द से दस धर्मों पर विशेष प्रवचन का लाभ श्रद्धालुओं को प्राप्त हुआ। शिविरार्थियों को तीन संधिकालों में ध्यान अभ्यास, प्रातः- सुप्रभात स्त्रोत, द्वात्रिंशतिका, (सामायिक पाठ) का अर्थ प्रातः 6.30 बजे से संगीतमय सामूहिक पूजन तथा मध्यान्ह में प्रोफेसर सुशील कुमार जी पाटनी द्वारा जैनागम संस्कार का स्वाध्याय, तत्त्वार्थ सूत्र के दस अध्याय का वाचन

एवं मुनिश्री द्वारा प्रतिदिन एक-एक अध्याय पर प्रवचन हुए। प्रातः 10.00 बजे सभी शिविरार्थियों को कुएँ के जल से मर्यादित शुद्ध आहार कराया गया एवं सायंकाल में केवल पेय आहार आदि की समुचित व्यवस्था की गई। सायंकाल में क्षुल्लक हर्षितसागर जी महाराज द्वारा सामूहिक प्रतिक्रमण कराया गया एवं गुरुभक्ति के उपरान्त स्थानीय विद्वानों श्री इन्दरचन्द जी गोधा व श्री नवरतनमल जी पाटनी एवं तमिलनाडू से पधारी ब्रह्मचारी बहनों द्वारा दस धर्मों पर आधारित प्रवचन दिये गये। पर्युषण पर्व के दौरान मुनि संघ सेवा समिति के तत्वाधान में रात्रि में विभिन्न सांस्कृति एवं धार्मिक नाटिकाओं का मंचन किया गया। इन कार्यक्रमों में श्री दिगम्बर जैन ऋषभदेव पाठशाला एवं महिला संगठनों ने सक्रिय योगदान दिये।

दिनांक 4 सितम्बर 09 को पर्युषण पर्व के समापन पर 13 महिला एवं पुरूषों ने 13 एवं 11 उपवास कर धर्म साधना की जिनका मुनिश्री के सानिध्य में षोडशकारण व्रत अनुष्ठान, श्रावक संस्कार साधना शिविर में बैठे शिविरार्थियों के साथ सम्मानित किया गया। सम्मान कार्यक्रम के पूर्व सोनी जी की नसियाँ में स्थित रत्नों से निर्मित जिनेन्द्र प्रतिमाओं के अभिषेक हुए। सभी शिविरार्थियों एवं उपवास करने वाले पुण्र्याजकों को धर्म प्रभावना हेतु भव्य शोभायात्रा निकालकर नगर भ्रमण कराया गया। इस भव्य शोभायात्रा की शोभा में ढोल, ऊँट, घोड़े, बग्घियाँ, बैण्ड-बाजे, आदि शामिल थे। संगीतमय भजन पार्टी अपने मधुर संगीत की स्वर लहरियों से धर्म प्रभावना करते हुए इस आलौकिक श्रावक साधना संस्कार शिविर की महिमा वर्णित कर रहे थे। सैकड़ों शिविरार्थी एवं श्रावकगण हाथों में केसरिया पताका लिए जैन धर्म की जय-जयकार कर रहे थे। नगर के सभी मार्गों को स्वागत द्वार से सजाया गया। 5 सितम्बर को षोडशकारण व्रत अनुष्ठान महोत्सव के समापन पर सोलहकारण महामण्डल विधान भी सम्पन्न हुआ। विधान के मंगल कलश की स्थापना रिषभ मार्बल परिवार द्वारा की गई। मुनिश्री ने सभी श्रावकों को इस व्रत की महिमा को पालने व जीवन में धारण करने का संकल्प दिलाया। विधान की समाप्ति के पश्चात् दोपहर में क्षमावाणी के अवसर पर जिनाभिषेक के पूर्व मुनिश्री के क्षमावाणी पर मंगल उद्‌बोधन भी हुए। इसके पश्चात् सामूहिक क्षमावाणी का आयोजन सम्पन्न हुआ।

अजमेर वर्षायोग के दौरान मुनिश्री द्वारा समस्त श्रावकों को तीर्थोदय काव्य, इष्टोपदेश, द्रव्य संग्रह, तत्त्वार्थ सूत्र, सम्यक ध्यान शतक तथा वारसाणुवेक्खा का स्वाध्याय सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। 2 व 3 अक्टूबर को प्रातः 8.15 बजे से 10.00 बजे तक स्थानीय कवियों द्वारा स्वरचित धार्मिक कवि संगोष्ठी आयोजित की जावेगी जिसमें विशिष्ठ कविताकारों को पुरस्कृत किया जाएगा।

दीपावली के एक सप्ताह पूर्व धार्मिक कंठ पाठ प्रतियोगिता का भी आयोजन होगा। दीपावली पर्व के दिन प्रातः 7.00 बजे वर्षायोग एवं कलश निष्ठापन कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम 25 अक्टूबर को दोपहर 2.00 बजे होगा। इसी कार्यक्रम में कंठपाठ प्रतियोगिता के विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया जावेगा।

कृपया यहाँ से निकालें

# भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

**प्रश्नोत्तर में प्रश्नों के चार प्रकार या विषय होंगे :-**

- चारों अनुयोगों पर आधारित
- तीर्थ स्थानों से संबंधित
- मुनि संघ से संबंधित
- जैन संस्कृति से संबंधित
- अहिंसा / शाकाहार / व्यसन मुक्ति

**प्रश्न प्रणाली**

1. एक प्रश्न के दिये गये उत्तरों में से एक सही उत्तर पर निशान लगाना ।
2. एक प्रश्न का दिया गया उत्तर (सही / गलत)
3. खाली स्थान भरना ।
4. प्रश्न का उत्तर (हाँ या ना)।
5. जोड़ी बनाओ ।
6. एक प्रश्न का विस्तृत उत्तर कम से कम दो लाइनों में वाक्य सहित।

**नियमावली :**

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है।
2. एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगी। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. बीस प्रश्नों में से एक सुनिश्चित प्रश्न का उत्तर कम से कम दो पंक्तियों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
5. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
6. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना आवश्यक रहेगा क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
7. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। यहाँ से भेजने के समय से

कृपया यहाँ से निकालें

लेकर वापिस आने का समय एक माह है। एक माह के ऊपर प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएं प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।

8. पुरस्कार राशि निम्नानुसार होगी।

| | | |
|---|---|---|
| **प्रथम पुरस्कार** | : | **108 योग्य संख्यक मूल्य** |
| **द्वितीय पुरस्कार** | : | **72 योग्य संख्यक मूल्य** |
| **तृतीय पुरस्कार** | : | **57 योग्य संख्यक मूल्य** |

9. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर से भेजी जावेगी।

   प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित करें।

10. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेगें।

11. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जावेगी।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन
एफ 108/34, शिवाजी नगर, पांच नंबर स्टाप के पास,
भोपाल (म.प्र.) 462 016

**उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े।**

# भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

**समय : 15 दिन** **अंक 100**

- 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।
- इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
- उत्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

**सही उत्तर पर [ ✔ ] सही का निशान लगावें -**

प्र. 1. आदिनाथ भगवान का जन्म और मोक्ष हुआ ?
पंचमकाल में [ ] तृतीय काल में [ ] चतुर्थकाल में [ ]

प्र. 2. राम का विवाह और वनवास कौन से तीर्थंकर के तीर्थकाल में हुआ?
तीर्थंकर अजितनाथ [ ] तीर्थंकर वासुपूज्य [ ] तीर्थंकर मुनिसुव्रत [ ]

प्र. 3. तीर्थंकर नेमीनाथ के चचेरे भाई थे ?
श्रीकृष्ण नारायण [ ] पंच पाण्डव [ ] प्रद्युम्न कुमार [ ]

प्र. 4. तत्त्वार्थ सूत्र के दश अध्यायों में किस-किस अध्याय में कौन-कौन से तत्वों का वर्णन है?

**हाँ या ना में उत्तर दीजिये -**

प्र.5. पंचम काल में जन्मे जीव को मोक्ष होता है क्या ?

प्र. 6. तीर्थंकर महावीर का विवाह हुआ था?

प्र. 7. स्त्री पर्याय (स्त्री द्रव्यवेद) से मोक्ष होता है क्या?

प्र. 8. स्वर्ग से सीधे नरक या मोक्ष जा सकते हैं क्या ?

**रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -**

प्र.9. तत्त्वार्थ सूत्र ग्रन्थ .......................................... ने रचा था।
[आशाधर जी, उमास्वामी, समन्तभद्र]

प्र.10. रत्नकरण्ड श्रावकाचार ............................... ने रचा था।
[आशाधर जी, समन्तभद्र, वसुनन्दी]

प्र.11. सर्वार्थसिद्धि ग्रन्थ .................................. ने रचा था।
[ आचार्य कुन्दकुन्द, अकलंक देव, पूज्यपाद]

कृपया यहाँ से निकालें

कृपया यहाँ से निकालें

प्र.12. धवला ग्रन्थ ................................ ने लिखा था।
[आचार्य पुष्पदंत, आचार्य भूतबलि, आचार्य वीरसेन]

**सही जोड़ी के सामने नंबर डालें -**

प्र.13. (1) आचार्य विद्यासागर जी की दीक्षा कहाँ हुई [ ] तमिलनाडु

प्र.14. (2) गन्धहस्ति महाभाष्य का नाम कहाँ की लायब्रेरी में है? [ ] अजमेर

प्र.15. (3) आचार्य कुन्दकुन्द ने कितने पाहुड़ ग्रन्थ रचे थे। [ ] जर्मनी

प्र.16. (4) मुनिश्री आर्जवसागर जी कौन से अहिंदी प्रांत में 7 वर्ष रहे थे।[ ] चौरासी

**सही [ ✔ ] या [ ✕ ] गलत का चिन्ह बनाइये-**

प्र.17. सम्मेद शिखर जी बिहार प्रान्त में है [ ]

प्र.18. खजुराहो सिद्धक्षेत्र है। [ ]

प्र.19. शिखरजी की भाव सह वन्दना से 49 भव में मोक्ष होता है। [ ]

प्र.20. गोमटेश बाहुबली भारत के प्रथम आश्चर्य में हैं। [ ]

**प्रतियोगी-परिचय**

नाम .................................................................. उम्र ..........................

पिता/माता/पति का नाम ............................................................................

नगर या गांव का नाम ...............................................................................

पता ...........................................................................................................

...................................................................................................................

मोबाईल/फोन नं. ........................................................................................

# भाव विज्ञान पत्रिका

## ✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

**दानवीर, किशनगढ़**

## ✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳

**श्री गौतम काला, राँची**

## ✳✳ सम्मानीय संरक्षक ✳✳

**श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई**
**श्री पदमराज होळल, दावणगेरे**
**श्री सोहनलाल कासलीवाल, सलेम**
**श्री संजय जैन, राँची**
**श्री आकाश टोंग्या, भोपाल**
**कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर**
**श्रीमती संगीता बजाज ध.प. श्री हरीश बजाज, टीकमगढ़**
**श्रीमती कमलाबाई ध.प. श्री अशोक जैन, साहबजाज**

## ✳ संरक्षक ✳

**श्री विजय अजमेरा, रीवा**
**श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर**
**श्री एस.एल. जैन ( बागड़िया ), जयपुर**
**श्री महेन्द्र जैन, लघु उद्योग निगम, भोपाल**

## आजीवन सदस्य

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी-दमोह
श्री जिनेन्द्र उस्ताद, दमोह
श्री नरेन्द्र जैन, सबलू दमोह
श्री निर्मल कुमार,  इटोरिया
श्री संजय जैन, पथरिया दमोह
श्री अभय कुमार जैन, गुड्डे पथरिया, दमोह
श्री निर्मल जैन इटोरिया, दमोह
श्री राजेश जैन हिनोती, दमोह
श्री चंदूलाल दीपचंद काले, कोपरगाँव
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले, कोपरगाँव
श्री अशोक चंपालाल ठोले, कोपरगाँव
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल, कोपरगाँव
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले, कोपरगाँव
श्री अशोक पापड़ीवाल, कोपरगाँव
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल, कोपरगाँव
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल, कोपरगाँव
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल, कोपरगाँव
श्री श्रीपाल खुशीलचंद पहाड़े, कोपरगाँव
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े, कोपरगाँव
श्री प्रेमचंद कुपीवाले, छतरपुर
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर, छतरपुर
श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स, गुना
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले, छतरपुर
श्री कमल कुमार जतारावाले, छतरपुर
श्री भागचन्द जैन, छतरपुर
श्री देवेन्द्र डयोढ़िया, छतरपुर
अध्यक्ष, महिला मंडल, डेरा पहाड़ी, छतरपुर
अध्यक्ष, महिला मंडल शहर, छतरपुर
पंडित श्री नेमीचंद जैन, छतरपुर
डॉ. सुरेश बजाज, छतरपुर
श्री विनय कुमार जैन, टीकमगढ़
सिंघई कमलेश कुमार जैन, टीकमगढ़
श्री संतोष कुमार जैन, टीकमगढ़
श्री अनुज कुमार जैन, टीकमगढ़
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले, टीकमगढ़
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़ वाले, टीकमगढ़
श्री राजीव बुरवारिया, टीकमगढ़
श्री सुनील कुमार जैन, सीधी
श्रीमती ओमा जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती केशरदेवी जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती शकुन्तला जैन, लश्कर ग्वालियर
श्री दिनेश चंद जैन, लश्कर ग्वालियर
श्री प्रमोद कुमार जैन, अशोक नगर
श्रीमती सुषमा जैन, लश्कर ग्वालियर
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी), लश्कर ग्वालियर
श्रीमती सुप्रभा जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती प्रमिला जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती मिथलेश जैन, लश्कर ग्वालियर
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती मीना जैन, हरीशंकर पुरम, ग्वालियर
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना, ग्वालियर
श्रीमती मीना चौधरी, लश्कर ग्वालियर
श्री निर्मल कुमार चौधरी, लश्कर ग्वालियर

## भाव विज्ञान पत्रिका

श्री कल्याणमल जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती सूरजदेवी जैन, माद्योगंज, ग्वालियर
श्रीमती उर्मिला जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती विमला देवी जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती विमला जैन, माधोगंज, ग्वालियर
श्रीमती मोती जैन, थाठीपुर, ग्वालियर
श्रीमती अल्पना जैन, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती रोली जैन, थाठीपुर, ग्वालियर
श्रीमती ममता जैन, माधव नगर, ग्वालियर
श्रीमती नीती चौधरी, लश्कर ग्वालियर
श्रीमती आभा जैन, चेतकपुरी ग्वालियर
श्रीमती सुशीला जैन, ग्वालियर
श्रीमती पुष्पा जैन, लोहिया बाजार, ग्वालियर
श्रीमती अंगूरी जैन, लश्कर ग्वालियर
श्री ओ.पी. सिंघई, ग्वालियर
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया, ग्वालियर
श्री सुभाष जैन, ग्वालियर
श्री खेमचंद जैन, ग्वालियर
वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया (असम)
श्रीमती सितारादेवी जैन, जबलपुर
श्री सुरेशचंद्र जैन, भिण्ड
श्री महेशचंद जैन पहारिया, भिण्ड
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले, भिण्ड
श्री संजीव जैन 'बल्लू', भिण्ड
श्री महेन्द्र कुमार जैन, भिण्ड
श्री महावीर प्रसाद जैन, भिण्ड
श्रीमती मीरा जैन ध.प. श्री सुमत चंद जैन, भिण्ड
श्री राजेश जैन (गंगवाल), जयपुर
श्री रिखब कुमार जैन, जयपुर
श्री बाबूलाल जैन, जयपुर
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा, जयपुर
श्री पदम पाटनी, जयपुर
श्री राजीव काला, जयपुर
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन, जयपुर
श्री पवन कुमार जैन, जयपुर
श्री घन कुमार जैन, जयपुर
श्री सतीश जैन, जयपुर
श्री अनिल जैन (पोत्याका), जयपुर
श्रीमती शीला डोइया, जयपुर
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या, जयपुर
श्री हरकचंद लुहाड़िया, जयपुर
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी, जयपुर
श्रीमती साधना गोदिका, जयपुर

### नये सदस्य

श्री प्रकाशचंद गंगवाल, किशनगढ़
श्री स्वरूपचंद बज (जैन), मदनगंज, किशनगढ़
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया), मदनगंज, किशनगढ़
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, देह, नागौर
श्रीमती सविता जैन, अजमेर
श्री नवरतन दगड़ा, मदनगंज, किशनगढ़
श्री भागचंद जी दोषी, मदनगंज, किशनगढ़
श्री भागचंद जी, अजमेर
श्री महावीर प्रसाद काला, अजमेर
श्री पदमचंद सोनी, मदनगंज, किशनगढ़
श्री ताराचंद जैन, मदनगंज, किशनगढ़
श्री सुरेश कुमार जैन (छावड़ा), मदनगंज, किशनगढ़
स्व. डॉ. पी.सी. जैन, लखनऊ
श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी, अजमेर
श्री सुरेशचंद पाटनी, अजमेर
श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी, अजमेर
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या, अजमेर
श्री निर्मलचंद जी सोनी, अजमेर
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन, अजमेर
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन, अजमेर
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल, अजमेर
श्री नवरतनमल पाटनी, अजमेर
डॉ. रतनस्वरूप जैन, अजमेर
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद जी सोगानी, अजमेर
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांडया, अजमेर
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन, अजमेर
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला), अजमेर
श्री संदीप बोहरा, अजमेर
श्री डी. भूपालन जैन, चैन्नई
श्री सी. सेल्वीराज जैन, चैन्नई
श्री राकेश कुमार जैन, अजमेर
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन, अजमेर
श्री पूरनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार (सुथनिया), अजमेर

# भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

कृपया यहाँ से निकालें

रंगीन फोटो

मैं ..........................................................................................

पिता/पति श्री ............................................................................

जिला ........................................ प्रदेश ........................................से

**भाव विज्ञान पत्रिका** हेतु शिरोमणी संरक्षण 51000/- ☐ परम संरक्षक 21000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ साधारण सदस्य 1,100/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ..................................................................

..........................................................................................

जिला .......................................... प्रदेश ..........................................

पिनकोड ................................ एस.टी.डी. कोड ....................................

फोन नम्बर .......................................... मोबाईल ...............................

ई-मेल .......................................................................... है।

हस्ताक्षर

दिनांक :

---

## कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .................................... पिता श्री ...............................

को परम संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/साधारण सदस्यता क्रमांक .....................प्रदान की जाती है।

दिनांक

हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

क्षुल्लक दीक्षा से पूर्व राजसिक भेष में ब्र. हरेश जी

क्षुल्लक दीक्षा के संस्कार करते हुए
परम पूज्य मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज

क्षुल्लक जी के लिए कमण्डल का अवलोकन कराते
हुए श्री अशोक पाटनी आदि

कमण्डल प्राप्त करते हुए
क्षुल्लक श्री १०५ हर्षितसागर जी

उपकरण भेंट करते हुए सुनील-राजेश जी, जयपुर

सोनी जी की नसियाँ, अजमेर में
मुनि श्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ससंघ

चातुर्मास कलश स्थापना का निवेदन करते हुए
भक्तगण

चातुर्मास कलश स्थापना पर ग्वालियर से पधारे
भक्तगण

रजि. क्रं. **MPHIN/2007/27127**

कार्यक्रम के अवसर पर पाद प्रक्षालन करते हुए
श्रीमान नरेश जैन, सूरत एवं पं. मूलचंद जी लुहाड़िया, किशनगढ़

अजमेर नसियाँ में दिनांक १३.८.०९ को मुनिश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए श्री सचिन पायलट, केन्द्रीय दूरसंचार मंत्री, भारत शासन

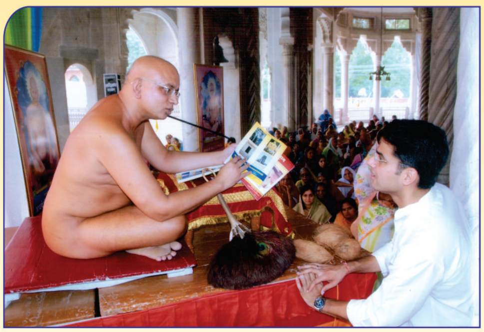

मुनिश्री से ग्वालियर स्थित वर्द्धमान मंदिर (किला) संबंधित जानकारी प्राप्त करते हुए श्री सचिन पायलट

मुनिश्री से साहित्य प्राप्त करते हुए
श्री सचिन पायलट

मुनिश्री का चित्र प्राप्त करते हुए
श्री सचिन पायलट

मुनिश्री का प्रवचन सुनते हुए भक्तगणों के साथ
श्री सचिन पायलट

पुण्यार्जक

सौजन्य से

**श्रीमती कमलाबाई धर्मपत्नी श्री अशोक जैन साहबजाज,**
परमसंरक्षक, श्री सेवायतन, श्री सम्मेदशिखर जी सिद्ध क्षेत्र एवं
अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय धर्म संरक्षणी महासभा (अजमेर इकाई)
४०/२३, जैन भवन, बाबू मोहल्ला, केसरगंज, अजमेर
फोन : २६२३३५७, मो.: ९८२९०७३४४१

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, साईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)